दूंगा—अब आइये क्योंकि सोना खरीदना और तौल कर आपके सुपुर्द करने में बहुत देर लगेगी अभी सर्राफ को भी रुपये देने होंगे"।

खैर हम लोग रवाना हुये। रास्ते में दल्लाल ने मुझ से पूछा "आप वहीं कोठी में मुझे रुपया दे दीजियेगा न? क्यों?

मैने कहा "देखा जायगा, रुपया मेरा नह. है मैं इस बारे में पूछ लूंगा"।

उसने कहा "आप का रुपया नहीं है?। तो किसका है?"

मैने कहा "उस का जिस ने तुम से काम लिया और जिस्से तुम १५०) पाओगे—क्या तुम बेवकूफ़ हो जो ऐसा पूछते हो?"

उसने कहा "नहीं मैं ख्याल करता था कि—"

मैने पूछा "क्या ख्याल करता था—कोई बदमाशी या बदज़ाती की बात होगी"।

उसने कहा "हां! अब आप चारमीनार जैसी बाते करते हैं"।

मैने उसे बीचही में रोका और गजब में देख कर कहा "अल्लाह जानता है अगर फिर तूने उसका नाम लिया कि—"।

"नहीं नहीं, कभी नहीं" वह कांप कर कहने लगा "मुझे मारिये मत, देखिये यह खुली सड़क है नाहक दंगा होजायगा, मेरे मुंह से अचानचक वह नाम निकल गया, मैं अभी ख्याल करता था कि—

मैंने कहा "फिर तूने दुबारा वही बात कही और अल्लाह जानता है कि इस्से तेरी बेशक कुछ मुराद है। कह तू क्या ख्याल कर रहा था?"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं" उसने कहा "मैं फकत—"

मैने कहा "हां कह, कहता क्यों नहीं?"।

उसने कहा "मैं यह ख्याल करता था कि आप फकत एक सिपाह हैं जो इस सौदागर के साथ हिन्दोस्तान से आये हैं"।

"तो फिर इससे क्या? यह तो तू पेश्तरही से जानता है"।

उसने कहा "मगर आप दौलतमन्द नहीं हैं"।

मैने कहा "बेशक नहीं"।

उसने कहा "तो क्यों नहीं हम और आप दोनों दौलतमंद हो जावें?"

मैने पूछा "क्योंकर?"।

वह बोला "पहिरेदारों को साथ मत लीजिये या जिन लोगों को मैं बतलाऊं ले लीजिये, वे सब पांच रुपये पर जो कहियेगा करने के लिये राजी हो जांयगे; हम दोनों रुपया लेकर भाग चलें और पासही इस पहाड़ में एक ऐसा मुकाम है कि वहां खज़ाना गड़ा है वहां चल कर हम दोनों हिस्सा लगा लेवें"।

मैंने पूछा "वह मुकाम कहां है—क्या दूर है ?"

"नहीं नहीं" उसने कहा "अगर आप चलें तो मैं दूर से दिखला दूं; ऊपर चढ़ने की अभी कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि दिन में वहां जाने से कोई देख लेगा"।

मैं उसके साथ कुछ दूर चला गया और उसने कारवांसराय और बेगमबाज़ार के पीछे एक ऊंचे पहाड़ी की तरफ़ इशारा कर के कहा—"आप आधी दूर की ऊंचाई पर वह सुफ़ेद मुकाम देखते हैं न ?"

मैंने कहा "हां"।

उसने कहा "बस वही मुकाम है फ़कत मैं और मेरे चन्द साथी लोग उसे जानते हैं; जो कुछ मुझे मिल जाता है मैं वहीं जमा कर देता हूं"।

मैंने पूछा "भला तुझे कितना मिल जाता होगा ?"

"यही थोड़ा बहुत; कभी कोई दुशाला, कभी कमखाबी रुमाल और कभी कुछ सोना चांदी वगैरः। मगर आप इसे पूछकर क्या करियेगा। मैं जो पूछता हूं सो कहिये कि आप हमलोगों में शरीक होइयेगा या नहीं ? हम लोग १६ आदमी हैं, एक तो वहीं फ़क़ीर के भेस में बैठा है और बाक़ी के इधर उधर हैं वक़्पर साथ के लिये सब आ जावेंगे"।

मैंने उसे ज़मीन पर पटक कर कहा "बदमाश, जानता नहीं तू किस से बातें कर रहा है ? यहां निराली जगह है और तुझे जहन्नुम भेज देना कोई मुश्किल बात नहीं, फ़क़त एक ही हाथ मेरे तलवार का बैठेगा कि तेरी यह झूठी ज़बान हमेशा के लिये खामोश हो जायगी"। यह कह मैंने अपनी तलवार आधी खींच ली। मैं खूब जानता था कि इस का क्या असर

होगा बस उसी तरह वह फिर घिघियाने और मिन्नत करने लगा। वह फौरन् मेरे पैर से लिपट गया मगर मैंने उसे झटकार कर थूक दिया और कहा "नाचीज़ मलजन्! तुझे छूने से इनसान नापाक होता है तेरे जैसे नामाकूल को हिन्दोस्तान का सैयद छूने में भी नफ़रत करता है। फौरन् मुझे साहूकार के पास ले चल क्योंकि अल्लाह जानता है कि मैं तुझ पर मुतलक एतकाद नहीं रखता"।

उसने कहा "आप हर्गिज़ ऐसा ख्याल न कीजिये मैं इस बारे में हमेशा ईमानदार रहा हूं"।

मैंने कहा "बेहतर है कि तूने ऐसा किया हो या फिर मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैं तुझ से इसका एवज़ लूंगा। चल आगे, और खबरदार रह अगर तूने ज़रा भी भागने की कोशिश की कि मैं तुझे बीच बाज़ार में दो टुकड़े कर डालूंगा"।

उसने कहा "तो आप मेरे साथ ही साथ चले आइये" इतना कह कर उसने अपना कपड़ा सम्हाला और हम दोनों फिर बाज़ार से होते हुये चले।

चलते चलते साहूकार की कोठी पर पहुंचे जो हमारे इन्तिज़ार बैठा था। रुपया और सोना मेरे आगे रख दिया गया और रसीद जो मैं अपने साथ लेता आया था मैंने उसे दे दिया। बादज़ां पहिरेदारों को साथ लेकर मैं अपने वालिद के पास खेमे में पहुंचा।

वहां पहुंचतेही दल्लाल ने कहा "मीरसाहब, दयावान मीरसाहब, जो कुछ मुझ से कुसूर हुआ हो उसे आप भुला दीजियेगा। भगवान जानता है मैं तो आप से फ़कत दिल्लगी करता था। मुझे ज़रा ऐसे मसखरेपन की आदत पड़ गई है, मैं हमेशा हंसता खेलता और खुश रहता हूं" इतना कह कर वह हंस पड़ा और फिर बोला "मगर मुझ गरीब का डेढ़ सौ रुपया आप न भूल जाइयेगा यह भी मुझे पूरी उम्मेद है"।

मैंने कहा "अगर तुझे एक कौड़ी भी लेना हो तो चुप रह। क्या दो ईमानदारों के साम्हने तुझ से यह इकरार नहीं होगया? तेरा कौड़ी कौड़ी चुका दी जायगी"।

जब रुपया संदूक में बन्द कर लिया गया सिपाहियों को कुछ इनाम दे रवाना किया; उन्हें जाते देख वह कमबख़्त दल्लाल इस तरह पीछे फिर उनकी तरफ़ देखने लगा गोया उसके जिन्दगी की उम्मेद उनके साथ रवाना हो चली अखिरकार आहिस्ते से रोनी सूरत बनाकर बोला —

"मीरसाहब मेरा रुपया दीजिये और मैं रूख़सत होऊं"।

मैने कहा "सब्र कर गिनां जाता है"।

वालिद बोले "आह ! मैं तो दल्लाल जी को भूलही गया था, इनका हक दे देना चाहिये।

सत्तरहवां पर्व्व।

वालिद ने रुपया गिन कर दल्लाल के सुपुर्द किया—उसे देखते ही उस का चेहरा चमक उठा और वह झुक झुक कर शुकरीया का अदाब बजाने लगा।

वालिद ने उस्से कहा "तो अब इन रुपयों की एक रसीद लिख दो"।

उसने फौरन् अपनी पगड़ी में से कलम निकाल कर कहा "बेशक, हुजूर मुझे ज़रा कागज़ और दावात देवें मैं अभी लिखने को तयार हूं"।

मैने कहा "यह ले, फ़ौरन् लिख"।

उसने रसीद लिख कर मुझे दे दिया और रुपयों को धोती के एक कोने में बांध कमर में खोंस कर बोला "तो अब मुझे हुक्म हो तो म रवाना होऊं, हुजूर ने इस गुलाम को देख लिया कि इसने कैसी ईमानदारी से आप का तमाम काम अंजाम किया है। आइन्दे जब कभी हुजूर हैदराबाद तशरीफ़ लावें तो चारमीनार पर पूछनेही से मोहन दास का पता हुजूर को मिल जायगा और यह गुलाम हमेशा अपने मालिक की खिदमत बजालाने में पूरी कोशिश करेगा'।

मैने कहा "सब्र कर मुझे तुझसे कुछ कहना बाकी है" और मैंने वालिद को रास्ते का तमाम अहवाल कह सुनाया

वालिद ने ग़ज़ब से कहा "क्यों रे कम्बख़्त यह बात सही है? बोल बदमाश!

मैं खुद तेरी जुबानी तमाम अहवाल सुना चाहता हूं, क्या तू मुझे लूटने की कोशिश में था?"

मोहनदास बुत की माफ़िक मारे खौफ़ के चुपचाप खड़ा था। उसकी आंखें एकटक लगीं और मुंह कुछ खुला हुआ था, यहां तक कि वह खौफ़ से थरथर कांपने लगा।

वालिद ने यह देखतेही उसे डांट कर कहा "तू इसी लायक है, मुझे तेरी शकल पर तेरी डकैती, खूंरेज़ी बदमाशी और हर किस्म की बद्दियानती झलकती है तू मारे जाने के काबिल है"।

"नहीं नहीं सरकार! हुजूर दिल्लगी करते हैं इस गुलाम से ऐसा क्या कुसूर हुआ?" इतना कहते ही उसके चेहरे पर खौफ़ गालिब हो गया।

वालिद ने कहा "बदमाश, मैंने तेरे ईमान पर अपना तमाम माल छोड़ दिया था और तू मुझे लूटने की फ़िक्र में था? तूने मुझे इस बिगाने मुल्क में भूखों मारने की तजवीज़ की थी। तूने सैकड़ों को लूटा और हज़ारों को धोखा दिया है; कह क्या तू हर्गिज़ इस काबिल है कि अभी भी जीता रह कर फिर इस दुनिया में मक्रोफ़रेब का जाल फैलावे?"

वह इतना सुनते ही मेरे वालिद के कदमों पर गिर पड़ा और उनके पैर से लिपट मारे खौफ़ के कांपने लगा, मुंह से उसके एक लफ़्ज़ भी न निकलता था; आखिरकार गिड़गिड़ाकर कहने लगा "जो कुछ हुजूर ने कहा मैं सब कुछ हूं—चोर, बदमाश खूनी लुच्चा पाजी—मगर मेरी जान बख्श दीजिये। हुजूर की शकल मेहरबान है अब मैं मर नहीं सकता, हुजूर के पास तलवार नहीं है सरकार मुझे क्यों कर मारेंगे?" उसे उसी वक़्त ख्याल हुआ कि हम दोनों के पास हथियार नहीं है और फ़ौरन् दर्वाजे की तरफ़ यह कहता हुआ भागा "अभी कोतवाल को खबर होगी तो तमाम शेखी निकल जायगी"। दर्वाजा बन्द था, उसने कई मर्तबः उसे खींचा और ढकेला तब तक मैंने फ़ौरन् उसके पीछे पहुंच रूमाल उसके गले में दिया। वह घूम कर मेरी तरफ़ देखने ही चाहता था कि दूसरे लहमें में बेदम हो ज़मीन पर आ रहा।

"शाबाश" वालिद ने कहा "आखिरकार इन्साफ़ के हाथ तले इस की

मौत हुई और इसके तमाम गुनाह भी इस के साथ हमेशा के लिये दफ़न हो जायंगी, दरहकीकत हम लोगों ने यह उम्दा काम किया"।

मैंने कहा "बेशक, उसने खुद इकरार किया था कि मैं खूनी, चोर और डांकू हूं—बस और क्या चाहिये था? यह जाय काबिलगौर है कि अभी थोड़ी ही उम्र में उसने किस कदर गुनाह और जुल्म किये थे"।

वालिद ने कहा "इसे उधर खींच ले जाओ और लूवों को बुलाओ, मैं इस की शक्ल नहीं देखा चाहता, इसे इसी मकान के अन्दर ही दफ़न कर दो क्योंकि शहर की भीड़ में इसे बाहर ले जाना वाजिब न होगा"।

मैंने कहा "बेहतर है—मगर ख्याल कीजिये कि हम लोग बहुतही बच गये अगर आपने मुझे इस बदमाश के साथ न भेजा होता तो बेशक हम लोग रुपयों से हाथ धो बैठते"।

उन्होंने कहा "दरहकीकत फर्जन्द! और रुपया पाने पर भी अगर तुम्हें यह शक न पैदा होता कि पांच रुपया सैकड़ा बहुत है तो मैंने बेशक उसे डेढ़ हजार दे दिया होता, मैं उसी वक्त इशारा करते ही समझ गया और वैसी बातें करने लगा, बेहतर हुआ कि हमने इस बदमाश को जानोमाल दोनों से महरूम किया"।

मैंने कहा "सही है, यह निहायत उम्दा और दिल्लगी का शिकार हुआ, मासिवाय इसके अभी आइन्दे के लिये उम्मेद बाकी है"।

वालिद ने कहा "उस पहाड़ के फकीर से?"

मैंने कहा "जी, हां वहां मुझे ज्यादा माल मालूम होता है"।

वालिद ने कहा "मगर खबरदार रहो, उसके तमाम गरोहवाले वहां होंगे, ऐसा न हो कि वे हमसे दूसरी तौर से पेश आवें"।

मैंने कहा "ज़रा सब्र कीजिये मैं बद्रीनाथ से जाकर सलाह करलूं यह मामला उस के और सर्फ़राज खां के लायक है, मगर आप एतकाद रखिये कि हम लोग हर्गिज़ कोई बेवकूफ़ी का काम न करेंगे"।

इतना कहकर मैं बद्रीनाथ के पास पहुंचा जो सराय में मेरे आसरे बैठा था। मुझे देखतेही उसने कहा—

"कहिये मीर साहब! आज शब को कितने आदमियों पर हाथ मांजने से आप की आसूदगी होगी। इस आबाद शहर में आदमियों की कुछ कमी नहीं है"।

मैंने कहा "हां मेरी तबीयत उसी तरफ़ है मगर जो सलाह उस वक्त हमारे आपके दर्म्यान ते पाई थी उस पर मेरा इरादा नहीं है, मैंने दूसरा ही शिकार तजवीज किया है"।

उसने कहा "वाह! वाह! तो आप सूंदे का काम कर रहे थे, वल्लाह कहिये तो कैसा शिकार है"।

मैंने जवाब दिया "इस शिकार में मज़बूत दिलवालों का काम है जो नंगी तलवारें चला सकें—कहिये आपकी तबीयत मेरे साथ चलने की है"?

बद्रीनाथ ने कहा "मैं तो आपके साथ मौत का भी मुकाबला करने को तयार हूं मगर मेरी समझ में नहीं आता कि आप किस धुन में हैं"।

मैंने कहा "लो सुनो" पस मैंने दल्लाल का तमाम किस्सा बद्रीनाथ को कह सुनाया।

उसने कहा "शाबास मेरे जमादार साहब, खूब होशियारी और अक्लमंदी का काम आपने किया। मैं कह सकता हूं कि किसी दूसरे शख्स से यह काम इतनी उमदगी के साथ अव्वल से आखीर तक हर्गिज अंजाम न होता, उस नालायक की वाजिब सज़ा हुई और अब मैं ख्याल करता हूं कि हम लोगों को उस पहाड़ का छिपा हुआ खज़ाना तलाश करना चाहिये"।

मैंने कहा "बस यही मेरी मुराद है, अगर मुझे वहां जाने का ठीक रास्ता मालूम होता तो मैं आज रातही को उसकी तलाश में चलता"।

बद्रीनाथ ने गौर करके कहा "अच्छा ठहरिये, कुछ बहुत लोगों की ज़रूरत नहीं है, फ़कत सात या आठ हिम्मतवर आदमी बहुत हैं। आप और मैं, पीर खां और मोतीराम, और चार शख्स और काफी हैं। सफ़राज खां के इन्तिज़ारी करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह सुबह के पेश्तर वापस नहीं आ सकता। मगर उस मुकाम का पता और यह हाल क्योंकर मालूम हो कि उन बदमाशों मे से कोई शख्स रात को वहां रहता है या नहीं?"।

मैने कहा "क्या कोई शख्स हम लोगों में से फकीर नहीं बन सकता? कलन्दर हो या कोई भी फ़कीरी भेस काफ़ी होगा, वह इसी वक्त चला जाय और घंटे दो घण्टे में ख़बर लेकर वापस आ जावे"।

बद्रीनाथ ने कहा "बस ठीक है, देखो तो कोई है? शेख जी को बुला लाओ"।

एक शख्स दौड़कर शेख़ जी को बुला लाया। इस बुड्ढे शख्स का हाथ जिसकी दाढ़ी सीने तक लटकती थी रूमाल पर ऐसा बैठा था कि उसका सानी हमारी तमाम गरोह में न पाया जाता था।

बद्रीनाथ ने उसके आतेही कहा "शेख जी आइये बैठिये मुझे आप से कुछ कहना है। अगर ज़रूरत पड़ जाय तो आप फ़कीर बन सकते हैं न?

उसने कहा "बेशक, कहिये मुसलमानी फकीर बनूं कहिये साधू या जोगी बन जाऊं मुझे सबका रत है। मेरे पास उनकी पोशाक वगैरह भी तमाम मौजूद है और मुझे उनकी बोल चाल में भी बहुत ज्यादः रत है"

बद्रीनाथ ने कहा "बहुत अच्छा तो सुनिये। इसी वक्त जाकर आप भेस बदल आइये, हम लोगों ने एक शिकार तजबीज़ किया है। इतना कह कर बद्रीनाथ ने अपना मतलब और मोहनदास का तमाम अहवाल उसे समझा दिया और कहा—"बस अब होशियार रहिये और शाम के पेश्तर वापस आकर यह बतलाइये कि वह मुकाम कैसा है और वहां कौन कौन रहता है?"

फिर बद्रीनाथ ने मुझसे पूछा "क्या आप कह सकते हैं कि वह फ़कीर जो वहां रहता है हिन्दू है या मुसलमान?'

मैने कहा: "मैने पंजे और अलम को चूने की दीवार के पास खड़े देखा इस्से गुमान करता हूं कि वह मुसलमान है"।

इतना सुन शेख ने कहा "बस अब मैं अपना काम कर लूंगा, साहबो अब मैं रवाना होता हूं और खुदा चाहेगा तो हर्गिज़ आप लोगों को मायूस न करूंगा और इकरार करता हूं कि वक्त के पेश्तर आप लोगों से आकर मुलाकात करूंगा"।

उसके जाने पर मैने बद्रीनाथ से पूछा "क्या यह इसका बन्दोबस्त कर सकेगा क्योंकि यह काम निहायत नाज़ुक है"।

बद्रीनाथ ने कहा "इस बात का आप हर्गिज़ खौफ़ मत कीजिये यह अपने फ़न् का पूरा उस्ताद और भेस बदलने में लासानी है । एक मर्तबः फ़क़ीर बन कर इसने ५ नानकशाही फ़क़ीरों को जो बहुत सा रुपया जमा कर घाट बनाने के लिये ले जाते थे हमारे हाथ कर दिया जिसमें हम लोगों को गहिरा माल दस्तयाब हुआ । मासिवाय इसके वह शेर के मानिन्द दिलेर है और बाकी के इसके काम तो आप खुदही देख चुके हैं ।

हम लोग बातें करही रहे थे कि सफ़्दराज़ खां आ गया और खुशी ब-खुशी कहने लगा "यारो, हम लोगों ने अच्छा हाथ मारा और खूब गहिरा माल लिआये हैं । वे सब मुसाफिर मारे गये और लूट का असबाब पीछे हमारे आदमी लोग लिये आते हैं" ।

मैने कहा "खैर बहुत अच्छा हुआ मगर तमाम असबाब ही है कि कुछ नक़द सिक्का भी हासिल हुआ" ?

उसने कहा "दोनों मीरसाहब, दोनों—मगर मैं समझता हूं कि आप इतना जल्द क्यों दयाफ़्त करते हैं जब कि आजतक आप की शकल उनका के मानिन्द नज़र न आती थी । हम लोग तो अब तक आराम से पन्नूलाल की हवेली में पड़े होते क्योंकि आप तो तमाम माजरा जानतेही हैं । मुझे ऐसी चालचलन बिलकुल नापसन्द है" ।

मैं उसके इस कलाम पर सख्त नाराज़ हुआ और खफ्गी के साथ जवाब देने ही का था कि बद्रीनाथ ने बीच में दखल दे कर कहा —

"हां हां —जाने दीजिये, झगड़ा न कीजिये यह निहायत अफ़सोस की बात काबिल भंगी और गंजियों के होगी; मेरी बात सुनिये । सफ़्दराजखां! देखो तुम लड़के नहीं हो और इस तरह आपे के बाहर हो जाना तुम्हें वाजिब नहीं है, पहिले सुन लो कि हमारे नौजवान जमादार साहब क्या कर रहे थे और मैं भवानी की कसम खाकर कह सकता हूं कि हम लोग यह माजरा सुन कर ज़रूर शर्मिन्दा हो जांयगे" ।

इतना कह कर बद्रीनाथ ने तमाम अहवाल कह सुनाया जिस्से सफ़्दराज खां का गुस्सा लहमें भर में जाता रहा और उसने उठ कर मुझे गले से लगा लिया और कहने लगा —

"माफ़ कीजिये मीरसाहब, मैं यह बात मुतलक न जानता था और अब यह सुबूत करने के लिये कि मैं आप का वैसाही दोस्त हूं मैं अर्ज़ करता हूं कि आप मुझे भी इस मुआमले में शरीक कीजिये क्योंकि अल्लाह जानता है यह अजीब माजरा है"।

मैंने कहा "बखुशी, हम लोगों को यह गुमान था कि शायद तुम वक़ तक न पहुंच सकोगे मगर चूँकि अब तुम आ गये हो मैं किसी तरह तुम्हें नहीं छोड़ सकता"।

फिर बद्रीनाथ ने उस से पूछा "हां तो वे सब के सब जिन्हें तुम यहां से ले गये थे मारे गये? क्या इस में किसी तरह की दिक्कत तो तुम्हें न हुई?"।

"मुतलक नहीं" खां ने जवाब दिया "हम उन्हें मुसलीपट्टम की सड़क पर ले गये और सुरूनगर के दूसरी तरफ़, एक मुकाम ऐसा मिल गया कि वहां अपना काम कर लाशों को एक कूएं में डाल दूसरे रास्ते से वापस चले आये। सुबहान अल्लाह! यह लासानी मुकाम है यहां तो हम लोग बरसों रोज़ नई दिल्लगी के साथ रह सकते हैं; मैं तो अब यहीं रहा चाहता हूं"।

मैंने कहा "जैसी तुमारी मर्ज़ी हो करना, जब हम लोग लूट का हिस्सा लगा लेंगे तब तुम खुद मुख़्तार हो—मगर तुम्हारे छुट जाने से हम लोगों को निहायत अफ़सोस होगा"।

इसी तरह हम लोग शाम तक बातें करते रहे और तब जिन लोगों को साथ ले जाने को थे उन आठों को जमा कर और अपने हथियार सजा, निहायत बेकली के साथ शेख जी की इन्तिज़ारी देखने लगे।

आखिरकार शेख जी आये और बखुशी कहने लगे—"अब देर करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैंने उस मुकाम पर जाकर उस फ़कीर से मुलाकात की। वह मज़बूत नौजवान शख्स है मुझे देखते ही बोला कि नीचे उतर जाओ, मगर जब मैंने कहा कि मैं भूखा और थका हूं और हिन्दोस्तान का रहने वाला हूं, मैं टिकने का कोई मुकाम नहीं जानता अल्लाह के नाम पर एक टुकड़ा रोटी और एक प्याला पानी मुझे इनायत कीजिये तो वह कुछ रहमदिल हुआ और मुझे अपने खोह में बुला कर कुछ खाना और हुक्का दे

इधर उधर की बातें करने लगा। मैंने अपनी डिब्बी निकाल कर थोड़ी सी अफ़ीम खाई जिसे देख उसने भी मुझ से मांगा और इस कदर चढ़ा गया है कि अब सुबह के पेश्तर न जागेगा। मैं उसे बेहोश सोता छोड़ आया हूं"।

मैंने कहा "अब वह हर्गिज़ न जागेगा, मगर आप उस मुकाम को खूब देख आये हैं न? माल किस जगह गड़ा होगा कुछ कह सकते हैं?"

शेख जी ने कहा "वह दो पहाड़ों की खोह के अन्दर रहता है, वहां अँधेरा बहुत है लेकिन मैंने एक कोने में देखा कि मिट्टी और पत्थर का एक चबूतरा बना हुआ है जिसे उसने अपने सोने का मुकाम बतलाया मैं ख्याल करता हूं कि उसी में तमाम जमा पोशीदा होगी"।

मैंने कहा "तो चलो अब एक लहमा भी देर न करना चाहिये शायद देर होने से उसके गरोह का कोई शख्स आ जाय। यह ऐन उनके बाज़ार जाने और माल मारने का वक़्त है अभी सब के सब बाहर होंगे"।

हम सब खुशीबखुशी चल पड़े और शेख जी को आगे कर छिपे छिपे दबके हुये उस पगडंडी पर पहुंचे जहां से ऊपर चढ़ने का रास्ता था।

यहां हम लोगों ने आहिस्ते २ कानाफूसी कर सलाह की और पांच शख्सों को यह कह कर नीचे खड़ा कर दिया कि जब हम लोग बुलावें तब ऊपर आना वे तो वहीं रहे और मैं बद्रीनाथ और सर्फ़राज़ खां को साथ ले कर आहिस्ते २ उस मुकाम पर पहुंचा जहां शेख जी हम लोगों के पेश्तर जा-कर खड़े थे।

हम लोगों के पहुंचते ही शेख जी ने धीरे से कहा "वह अभी तक सोता है मगर आप लोग आहिस्ते २ आइये ऐसा न हो कि वह पैर के खटके से जाग उठे—देखिये वह साम्हने उस चिराग के पास पड़ा है"।

मैंने बद्रीनाथ से कहा "बस यह मेरा हो चुका, आप और सर्फ़राज़ खां इसे पकड़े रहना"। मैंने देखा कि वह शख्स बदन से निहायत ताकतवर मालूम पड़ता था इसलिये मैंने यह होशियारी और दूरन्देशी इस मौके पर वाजिब समझा। मगर वह जमीन पर लेटा था, मैं इस ख्याल में हुआ कि इस के गले में रूमाल क्यों कर डाला जाय? मैंने अपना पसोपेश बद्रीनाथ से

बयान किया, उसने अपनी तलवार के म्यान के चिपटे हिस्से से उस फ़कीर के पेट पर एक थपका ज़ोर से दिया और वह उसी दम उठ बैठा"।

"यह क्या? चोर—" बस इतना उसके कहते ही मैंने फ़ौरन् रूमाल उस के गले में दिया और वह मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

मैंने बद्रीनाथ से कहा "अब चिराग तेज़ करिये और नीचे से तीन शख़्सों को बुला लीजिये और बाक़ी के लोग वहीं ख़बरदार रहें"।

बद्रीनाथ ने उसी फ़क़ीर के कपड़े में से एक चीथड़ा फाड़ कर मोटी सी बत्ती बना तेल में डुबा कर जलाया जिसकी तेज़ी से तमाम खोह रोशन हो गया और हर एक चीज़ साफ़ दिखलाई देने लगी।

शेख़ जी ने कहा "देखिये यही वह चबूतरा है जिस के बारे में मैंने आप लोगों से कहा था बेहतर है कि हम लोग इस के पीछे तलाश करें"।

हम लोग उसके पीछे जा खड़े हुये देखते क्या हैं कि एक कोने में टूटे फूटे झंझर और सुराहियों का ढेर लगा है जिस में हम लोगों ने अव्वल ख्याल किया कि शायद अनाज या आटा होगा और दरहक़ीक़त उनमें से दो में जिन्हें हम लोगों ने पहिले पहिल खोला चावल और दाल निकला; मगर तीसरा कुछ भारी मालूम हुआ।

मैंने कहा "इस में चावलों के सिवाय कुछ और भी है इसे अच्छी तरह देखो"। उसके मुंह पर चीथड़े भरे थे जिन के हटाने पर नीचे से रुपये दिखलाई दिये इस में फ़क़त रुपये ही न थे बल्कि रुपये और पैसे सब एक हो में मिले थे।

बद्रीनाथ ने कहा "यह अक़्लमन्दी का काम नहीं है, शाह को ताम्बा और चांदी एक ही में मिलाना न चाहिये था; चांदी काली पड़ जायगी पर ख़ैर हम लोग उसे साफ़ कर लेंगे"।

दूसरा बर्तन भी वैसा ही निकला, मगर आख़िरी सब से उम्दा था, इस में सोने चांदी के गहने मसलन् अंगूठी, कड़े और जोशन भरे थे। हम लोग वह देख कर कांप उठे कि उन में कई एक गहने खून से भरे हुये थे।

मैंने कहा "उस बदमाश ने दरहक़ीक़त सही कहा था जब उसने यह इक़रार किया कि मैं खूनी हूं, बेहतर हुआ कि वह कम्बख़्त इस शहर से दूर हुआ, मगर अब फ़ज़ूल बातों में वक़्त जाया न करना चाहिये, एक शख़्स इस तमाम माल को बांध कर चलने के लिये तयार रहे और तब से हम लोग और माल तलाश करें।

अब इस कोने में कोई और चीज़ न थी सो हम लोगों को किसी कपड़े की गठड़ी या और किसी चीज़ की उम्मेद न रही। हम लोग इधर उधर देख रहे थे कि शायद कोई और ऐसा मुकाम दिखलाई पड़े जहां माल छिपा हो और अनक़रीब वहां से रवाना होने को थे कि इतने में सर्फ़राज़खां ने जो बाहर निकल गया था हम लोगों को आवाज़ दी और कहा—

"इधर आइये यहां एक शक का मुकाम मालूम पड़ता है"।

हम लोग फ़ौरन् बाहर दौड़ आये और देखा कि सर्फ़राज़खां एक बड़ी बिल के साम्हने खड़ा है, इस के अन्दर निहायत अंधेरा था और एक शख़्स बमुश्किल हाथ पैर के बल अन्दर जा सकता था।

मैंने कहा "चिराग़ लाओ मैं इस के अन्दर घुसूंगा चाहे शैतान ही इस में क्यों न हो"।

ज्योंही मैं अन्दर चला बद्रीनाथ ने कहा "अगर शैतान हो तो कुछ खौफ़ नहीं मगर उन बदमाशों का कोई साथी न होना चाहिये"।

अन्दर जाने पर मैंने किसी को न पाया और देखा कि वह मुकाम जो इस क़दर तंग था कि इन्सान बमुश्किल सीधा खड़ा न हो सकता था तमाम गठड़ियों से भरा है।

मैंने अंदर से पुकार कर कहा "यहां न तो शैतान और न उन्हीं कम्बख़्तों में से कोई है, पस एक शख़्स अन्दर आकर देखे कि मैंने क्या माल पाया है"।

मेरे सब दोस्त अन्दर आ गये और हम लोग फ़ौरन् गठड़ियां खोलने लगे। ज्योंही मैंने एक गठड़ी खोली कि जिसमें मैं पीतल के बरतन वगैरह समझता था मगर कुछ चांदी और सोना देखकर निहायत खुश हुआ था कि बाहर से खटके की आवाज़ आई। हम सब फ़ौरन् बाहर निकल आये, देखते क्या हैं

कि हमारे वेही दोनों साथी जिन्हें हम नीचे छोड़ आये थे खड़े हैं। मैंने पूछा "क्या है?"—

वे बोले "दो शख़्स आहिस्ते २ उस तरफ़ से आ रहे हैं, हम लोग उन्हें दूर से देखते थे मगर जब वे इधरही को चढ़ने लगे तो हमने आप लोगों को खबर देना वाजिब समझा; वे तेज़ नहीं चलते, मालूम होता है कि कुछ बोझ लिये आते हैं"।

मैंने कहा "फ़क़त दोही, तो कुछ परवाह नहीं, उनका बन्दोबस्त ब-आसानी हो जायगा, मगर चिराग़ बुझा कर खोह के दर्वाज़े ही पर छिप रहो, ज्योंही वे अंदर आवें त्योंही उन पर टूटना चाहिये"।

हम लोग ज्योंही ऐन दर्वाज़े के मुंह पर जाकर रुमाल लिये खड़े हुये और दो साथियों ने तलवार खींच ली थी कि उन में से एक शख़्स दूर से चिल्ला कर बोला "अरे हुसेन! हुसेन! इधर उतर आ हमारा बोझा उतार। यह देख हम दोनों पल्लेवालों की तरह लदे हैं और तू चिराग़ भी नहीं दिखलाता?"

मैंने आहिस्ते से कहा "यारो चुप रहना एक लफ़्ज़ भी न बोलना ज़रा उन्हें नज़दीक आने दो"।

दूसरे ने बाहर से कहा—"अरे वह हरामी का पिल्ला शराब पीकर नशे में मस्त होगा हम लोगों की कब सुनता है। ठहरो बचा से कैसा समझता हूं"।

मैं ख्याल करता हूं कि वे दोनों ठोकर खा कर गिरे क्योंकि वे बेदम हो कर फिर उस फ़क़ीर को गालियां देने लगे मगर थोड़ी देर बाद वे दोनों ऊपर पहुंच गये और बोझा सिर से पटक खोह की तरफ़ देखने लगे। बोझे के गिरते ही झनझनाहट की आवाज़ हम लोगों के कान में आई।

आखिरकार उनमें से एक शख़्स जो अच्छा लम्बा जवान था (ठीक उसी मुक़ाबिल का जैसा कि हम मार चुके थे) बोला—"कहां है वह बदमाश, जो साला चिराग़ भी नहीं दिखलाता, मैं समझता हूं कि या तो वह गांजा पी कर मर गया होगा या कहीं भंगेड़-खाने की सैर को चला गया होगा जब उसकी यहां हम लोगों को इतनी ज़रूरत है"।

दूसरा शख़्स थक कर बैठ गया और दम लेने लगा।

फिर बोला "जाओ, अन्दर जाकर देखो तेल की घरिया और दीया दीवार के पीछे रक्खा होगा । मैं यहीं बैठा हूं" ।

वह पहिला शख्स उस फ़कीर को गालियां और बद्दुआ देता हुआ अन्दर घुसा और सर्फराजखां और मैं दोनों उस पर टूटे और उस्का काम तमाम किया मगर वह दूसरा शख्स खटपट की आवाज़ सुनतेही चिल्लाकर भागा । लेकिन यह उस की किस्मत में न था भागते ही उसका पैर फिसला या अपनी गठड़ी पर ठोकर खाकर वह गिरा और पेश्तर इस के कि वह उठे हमारे साथियों में से एक ने पहाड़० के पीछे से निकल तलवार से उसकी गर्दन दो कर दी ।

"बस" मैंने कहा "यह काम तो हो गया—बेहतर है कि हम लोग अब रवाना हों, मगर पहिले एक मर्तबः फिर उस खोह के पास चल कर देखना चाहिये कि वहां से क्या हाथ लगता है, तब तक एक शख्श इन गठड़ियों को खोल कर देखे" ।

हम लोग फिर उस खोह में घुसे और हर एक शख्स एक एक गठड़ी ले कर बाहर निकल आया । जो दो गठड़ियां वे दोनों लाये थे जिन्हें हमने मार डाला था खाना पकाने के बरतनों और कपड़ों से भरी थीं इसलिये उन्हें वहीं छोड़ हम लोग सराय को चले आये ।

साहब, मैं आप से अर्ज़ करना भूल गया कि कितने ही निशानात् हम लोगों ने उन बदमाशों के जुलम और खून के उस मुकाम पर पाये, उन में कई एक गठड़ियां पोशाक की पाई गईं जिन पर खून के सूखे दाग लगे थे । एक गठड़ी जो मैंने खोली अभी तक तर थी और खून मेरे अंगुलियों में लग गया पस मैंने नफ़रत और रतूबत से उसे फेंक दिया ।

अठारहवां पर्व्व ।

हम लोगों ने वापस आकर इस कामयाबी पर खूब कहकहा मारा । यह नये किस्म का शिकार था । हम लोगों ने ख्याल किया कि जब वे डाकू वहां आकर अपना तमाम माल व असबाब लुटा देखेंगे और अपने साथियों को

दर्वाज़े ही पर मरा पावेंगे तो उन्हें किस क़दर रंज व नाराज़ी होगी कि अगर वे हम्हें पा जावें तो शायद कच्चा ही चबाने की कोशिश करें।

मैंने तमाम ज़ेवर और चांदी के बरतनों को जो वहां से मिले थे अपने सन्दूक में रख कर ताला लगा दिया ताकि मौका पाकर उनके फ़रोख़ वगैरह का सामान किया जायगा।

साहब, यह कहना फ़ुजूल है कि मेरे वालिद निहायत खुश हुये, ज्यों ज्यों मैं नये नये काम करता जाता त्यों त्यों उन्हें ज्यादःतर अज़ीज़ होता जाता था। वे मुझे बच्चे के मानिन्द प्यार करते और हर काम में हिम्मत दिलाते थे।

उस वक़्त उन्होंने जोश में आकर कहा "सब्र कर फ़र्ज़न्द, जब तेरे ये काम हिन्दोस्तान में ज़ाहिर होंगे तो मैं उम्मेद करता हूं कि तू बहुत जल्द सूबेदार हो जायगा जिस दर्जे को आज तक बहुत कम लोग पहुचे हैं।

मैंने इसका कुछ भी जवाब न दिया मगर दिल में यह मुसम्मम इरादा किया कि जैसे हो इस दर्जे को हासिल करना चाहिये। मुझ को ज़ाहिर हुआ कि इस ऊंचे दर्जे तक पहुंचने के लिये जिस का ज़िक्र मेरे वालिद ने किया फ़क़त दो एक कामयाब चढ़ाइयों की ज़रूरत है जिनमें लोगों को खूब गहिरा माल हाथ लगे और जिनमें मैं कोई निहायत दिलेरी और जवांमर्दी का काम दिखलाऊं। मुझे इस दर्जे के हासिल करने में कुछ भी शक न था क्योंकि मैं बखूबी आगाह था कि मेरे पेश्तर दूसरे लोगों ने यहां तक तरक्की पाई है पस तो क्यों नहीं मैं भी उस बुलन्दी तक पहुंचूगा जब कि मैं दिलोजान से उन कामों के करने में मुस्तैद हूं कि जिन्हें इन्सान सुनते ही खौफ़ से कांप उठता है।

इस वारदात के दोही दिन बाद तमाम कारवांसराय और आस पास के बाशिन्दों में बसबब लाशों की बदबू और गीधों के जमा होने के एक हादिसा फैल गया। जितने मुंह उतनी बातें सुनने में आती थीं। कोई कहता ये मुसाफिर हैं इन्हें कोई चोर मार गया कोई कहता नहीं यहां डाकुओं की लड़ाई हुई है मगर बादज़ां उन्हें पहिचानने और माल पाये जाने पर सब खुश हुये। बहुत सा चोरी का माल पाया और पहिचाना गया इसमें कुछ माल निहायत बेशकीमत पाया गया जो कुछ दिन पेश्तर किसी साहूकार का चोरी गया था

और जो हम लोगों से बसबब जल्दी के वहीं छूट गया था ताहम् हम लोगों ने बहुत माल पाया था । हमारे साथियों में से एक शख्स ने तमाम सोने चांदी का माल चुपके से गला कर थोक कर लिया जो तौलने पर अंदाजन सात हज़ार रुपये का माल मालूम हुआ ।

जब तमाम माल मसलन् ऊंट घोड़े बैल गाड़ी और जवाहिरात वगैरह फरोख़ हो चुका तो अनकरीब ५००००) जमा हुआ; पहिले यह सलाह हुई कि इसका हिस्सा लग जावे फिर तमाम ठगों की राय से यह मश्वरत् कायम हुई कि अपने गांव पहुंचने पर हिस्सा लगाना वाजिब होगा क्योंकि अभी लौटते वक़ भी बहुत कुछ उम्मेद है; तब तक ज़रूरत रफ़ा करने के लिये हर एक छोटे ठग को बीस बीस रुपया और हर एक जामादार को पचास पचास रुपया बांट दिया गया। तब मेरे वालिद ने शहर से रवाना होने का ज़िक्र किया मगर मैंने अर्ज़ की कि अभी दस रोज़ यहां और ठहरिये क्योंकि मैंने बद्रीनाथ और सर्फ़राजखां से मिल कर यह सलाह की है कि तमाम गरोह को चार हिस्से में तकसीम कर शहर के चारो तरफ़ कायम किया जावे और हर एक गरोह अपना अपना काम कर के तमाम आमद एक ही मुकाम पर जमा करे; यह तमाम माल कार खतम होने और रवानागी के पेश्तर तकसीम कर लिया जावेगा ।

इस तरकीब और सलाह को वालिद ने पसन्द किया और उसी दिन इसकी कार्रवाई शुरू हुई । मकान का जो कुछ थोड़ा बहुत किराया था चुका दिया गया और इस बहाने पर कि हम लोग अब हिन्दोस्तान को वापस जांयगे हमने कारवांसराय से रवाना हो कर शहर के दूसरी तरफ़ एक मुकाम पर मीरजुमला के तलाब के पास खेमा खड़ा कर दिया । बद्रीनाथ अपने चन्द साथियों को ले कर रेसिडण्ट के आलीशान मकान के पास चद्दरघाट बाज़ार की तरफ़ जा रहा और चूंकि यह निहायत मशहूर रास्ता था इसलिये अक्सर मुसाफिरों का आना जाना इसी तरफ़ से ज़्यादातर होता था और यहीं से पूरब और उत्तर की तरफ़ बहुतेरी सड़कें जाती थीं । सर्फ़राजखां अपने आठ आदमियों के साथ वहीं कारवांसराय में रह गया क्योंकि हमारे बनिस्बत लोग

उस्से बहुत कम वाकिफ़ थे। चौथी गरोह ने पीरखां और मोतीराम के मातहत शहर के पच्छिम तरफ़ उस मुकाम पर डेरा किया जहां से रास्ता शमशाबाद की तरफ़ जाता था, इन लोगों का यह इरादा था कि हम इसी मुकाम पर ज्यादातर नामवरी अपने कार की हासिल करेंगे।

इम लोगों की यह तरकीब निहायत उमदगी के साथ कामयाब हुई कोई रोज़ ऐसा न जाता था जिस में हर एक गरोह के हाथ नया शिकार न लगे, और जो कुछ माल हम लोगों के हाथ लगता सब मेरे वालिद के पास इस नये मुकाम पर जमा होता था और जो उसमें से नग़द बिक्री लायक होता उसे वे फ़ौरन् फ़रोख़ कर डालते थे।

इन छोटे छोटे मामलातों में जो काम मैंने किये उन के बयान करने की कोई ज़रूरत नहीं है। पेश्तर जब मैने अपने लिये यह मुकाम पसन्द किया मुझे ख्याल हुआ था कि यहां मुझे ज्यादा शिकार मिलेंगे मगर मेरी अज़हद कोशिश पर भी बहुत कम लोग मेरे हाथ लगे, पस मैने बद्रीनाथ और सर्फ़राज खां से कहा कि भई आओ हमलोग जगह बदल लेवें, मगर वे इस पर राजी न होते थे क्योंकि वे लोग अपना अपना बन्दोबस्त बांध चुके थे और चूंकि यह मुकाम मैने अज़ख़ुद पसन्द किया था इसलिये मुझे उसके बदलने या उस्से आसूदः न होने का कोई हक़ न था।

इस कार्रवाई के आठवें दिन अलसुबह बद्रीनाथ मेरे पास ख़ौफ़ से घबराया हुआ आया और कहने लगा—

"मीरसाहब! अब यहां से भागना चाहिये वर्नः आफ़त् आया चाहती है"

मैने ताज्जुब से पूछा "क्यों क्या हुआ? क्या कोई भेद खुला या हमारे ही गरोह में से किसी ने बेईमान होकर राज़ फ़ाश किया"!

बद्रीनाथ ने कहा "मै बयान करता हूं, सुनिये—यह जाये-अफ़सोस कि हमारे चंद निहायत होशियार शख़्स गिरफ़्तार हो गये हैं? आप जानते हैं कि बाज़ वक़्त सर्फ़राज़खां होशियारी और अक़्लमंदी को दबाकर हिम्मत कर जाता है और यही सबब है कि बहुत कम शख़्स उसकी रहनुमाई पर एतकाद रखते हैं; अगर उसमे इतनी कसर न होती तो वह अबतक हमलोगों

में होशियार जमादार हो जाता क्योंकि वह पुश्तैनी ठग है और उसके बुज़ुर्गों का बड़ा नाम है।

मैंने निहायत बेसब्री से पूछा "मगर हुआ क्या सो बयान कीजिये उसके बुज़ुर्ग जहन्नुम को गये अल्लाह जानता है कि आप भी—"

बद्रीनाथ ने निहायत मुलायमियत से जवाब दिया क्योंकि वह हर्गिज़ नाराज़ न होता था "नहीं नहीं मीरसाहब मैं कुछ उसके बुज़ुर्गों का किस्सा नहीं बयान करता था, आप नाराज़ न होइये मगर सुनिये—कल शाम को सर्फ़राज़खां ने दो साहूकारों से जो औरंगाबाद को जाते थे मुलाकात की और उनसे यह कह कर कि हम लोग भी वहीं जाते हैं उन्हें सराय में टिका लिया। वे मालदार मालूम होते थे क्योंकि उनका असबाब दो बड़े बड़े टोकरों में सराय को लाया गया और वे उसकी निहायत होशियारी से हिफ़ाज़त करते थे। कमबख़्ती की मार इत्तिफ़ाक से शाम के वक़्त दो या तीन सौदागर और वहां आ गये जिनसे उन दोनों की जान पहिचान थी, उन सभों ने इन दोनों साहूकारों को सलाह दी कि आप लोग एक हफ़्ता और ठहर जावें तो हम लोग भी उसी तरफ़ को आप के हमराह चलेंगे। वे इस पर राज़ी हो गये मगर सर्फ़राजखां को इस्से निहायत रंज हुआ उन दोनों ने अपने उन दोस्तों से कहा कि रात के वक़्त यहां से असबाब उठाने में ख़तरा और तरद्दुद है इसलिये हम लोग आज यहीं सो रहेंगे और सुबह को आप लोगों से आकर मिल जांयगे। मैंने सुना कि सर्फ़राज़ ने बारहा उनसे इस इरादे को बदलने के लिये कहा मगर वे किसी तरह राज़ी न हुये। पस आप जानिये कि फ़क़त एक यही तरकीब रह गई कि उन्हें सरायही में मार कर दफ़न कर दिया जाय, मासिवाय इसके जब उन लोगों ने अपना असबाब रात के वक़्त वहां से हटाने और उठाने में ख़तरा ज़ाहिर किया तो सर्फ़राज़खां को पक्का गुमान हुआ कि इनमें कोई बेशक़ीमत माल है। बेशक मीर साहब मैं ख़ुद इकरार करता हूं कि वह मौका निहायत लालच का था अगर मैं होता या ख़ुद आपही होते तो शायद आपको भी ऐसाही ख़्याल होता तो फिर सर्फ़राज़खां का क्या पूछना है। अगर वह सुबह तक ठहर गया होता और उस वक़्त

कार करके लाशों को वहीं छोड़ फौरन् रवाने हो कर किसी दूसरे रास्ते से आकर मुझसे या आपसे मिल गया होता और हम लोगों में से कोई शख्स उस की जगह कारवाँसराय में जा रहता तो कोई भी शक न करता। मगर नहीं, उसने इस बात पर ख्याल न करके उनके दोस्तों के जाने के बादही उन्हें मारडाला और माल हटा दिया। खैर जो हुआ सो हुआ उस माल मे से फ़कत दो माला मोतियों की हमारे हाथ लगी मगर उम्दा माल तमाम जाता रहा"।

मैने पूछा "मगर आपने यह बयान न किया कि यह माजरा ज़ाहिर क्यों कर हुआ"?

बद्रीनाथ ने कहा "इसके थोड़े ही देर बाद उन तीनों शख्सों में से एक शख्स कुछ सँदेसा लेकर वापस आया और उन दोनों साहूकारों को तलाश करने लगा। सर्फ़राजखां ने उसे यह बहाना बता दिया कि वे लोग कहीं बाहर गये हैं जल्द आवेंगे। वह शख्स बहुत देर तक उनकी इन्तज़ार में बैठा था मगर जब वे न आये तो उसे कुछ शक हुआ और उठ कर चला गया। थोड़ी देर बाद बाकी दो शख्सों को भी साथ लेकर आया और उन्होंने अपने दोस्तों की तालाश के लिये ज़िद बांधी। सर्फ़राजखां ने इस अर्से में लाशों को वहीं दालान में दफ़न कर दिया था मगर चंद चीजें उसके पास ऐसी दिखलाई दीं जिन्हें उन सभों ने पहिचाना खास कर एक थैली जो वहां पड़ी थी; खैर किस्सा कोताह यह कि गारद के पहिरे मे जो फ़ौरन् बुला ली गई वे सब शहर को चालान किये गये फ़कत एक शख्स हिम्मत खां नामी जो सर्फ़राजखां के साथियों का था बच गया क्योंकि वह उस वक्त बाहर किसी काम से गया था।"

मैने कहा "दरहकीकत यह निहायत अफ़सोस का मुकाम है मगर मुझे कोई तरकीब नहीं सूझती कि क्योंकर उन्हें छुड़ाना चाहिये"।

बद्रीनाथ ने कहा "मेरी भी यही हालत है मगर ये सब खराब नतीजे तभी होते हैं जब सगुन नही देखा जाता या देखे जाने पर भी उन पर वाजिब तौर से ख्याल नहीं किया जाता।"

"छिः!" मैंने कहा "आप तो हमेशा ऐसी फ़ज़ूल बकबक लगाये रहते हैं गोया दिल की मज़बूती और तरकीबों की बनिस्बत कामयाबी का होना इन्हीं सगुनों पर मुन्हसर है। मैं ऐसी वाहियात बातों पर हर्गिज़ एतकाद नहीं करता"।

बद्रीनाथ ने कहा "तो फिर किसी न किसी दिन आप को भी पछताना पड़ेगा, याद रखिये कि आप ज़रूर धोखा खावेंगे। मैं आपको सैकड़ों वारदातें ऐसी सुना सक्ता हूं जहां लोगों ने सगुन का लिहाज़ न करने से तकलीफ़ उठाई है, मेरे कहने की सचाई आप चाहे अपने वालिद से पूछ लीजिये"।

"फ़ोह!" मैंने कहा "वे भी आपही के मानिन्द ऐसी फ़ज़ूल और वाहियात बातों पर एतकाद रखते हैं तो क्यों नहीं आप मेरी इस नाएतकादी की शिकायत मेरे वालिद से करते, मुझे क्यों फ़ज़ूल तसदिया पहुंचाया करते हैं"।

उसने कहा "बेशक मैं ज़रूर इसकी शिकायत उन से करूंगा मगर चूंकि ऐसा देखा जाता है कि उन्होंने इस चढ़ाई का तमाम बन्दोबस्त और इख़्तियार आप के सुपुर्द कर दिया है और अपने सर्दारी के उहदे और जवाबदेही को बिलकुल भूल गये हैं इसलिये मैंने आप से यह बात कही थी। भला आपही कहिये कि आज तक कभी किसी ने यह बात सुनी थी कि बग़ैर सगुन देखे या भवानी को पर्शाद चढ़ाये तमाम गरोह मुख़लिफ़ होकर अपना २ कार करे।"

मैंने ठट्ठे से कहा ख़ैर "आपने तो वे तमाम सगुन और दस्तूर जिन्हें आप निहायत ज़रूरी समझते हैं बेशक कर लिया होगा और अगर नहीं किया है तो हम और किससे इन बातों की उम्मेद करें क्योंकि आप तो निशानबरदार हैं? खुदा और रसूलाह जानता है बद्रीनाथ! कि आपने हम सभों को धोखा दिया"—फिर मेरा गुस्सा तेज़ हुआ और मैंने कहा "और मैं जो आपसे कहता हूं कि मेरे वालिद के बारे में जो आपने कहा उससे खबरदार रहियेगा और याद रखियेगा कि मैं इस काबिल हूं कि आप जो कुछ उनके बर्ख़िलाफ़ कहें उसका बदला ले सकूं"।

बद्रीनाथ ने निहायत संजीदगी से जवाब दिया "मेरे नौजवान मीरसाहब, आप मुझे जानते ही हैं कि मैं फ़ज़ूल झौं झौं और झगड़े कभी नहीं

और आपके ये खफ़गी के अलफ़ाज़ हवा में उड़ गये; आप इन्हें उन लोगों के साम्हने कहिये जो इन बातों पर नाराज़ हो कर आप से झगड़ा करें मैं इन्हें फ़जूल समझता हूं। इन सगुनों पर जिन्हें तमाम हिन्दू और मुसलमान ठग मानते आये हैं आप का एतकाद न होना फ़कत आपकी नातजरुबाकारी का बाइस है; इस वक्त ज़रूरी कुर्वानियां और रस्मों का लिहाज़ हम लोगों ने न किया और यह उसकी सज़ा देखिये। गोकि इस वक्त हम लोगों को यह थोड़ी सी सज़ा दी गई है मगर हम नहीं कह सकते कि शायद बहुत जल्द हम सब के सब खतरे में पड़ जावें, फ़र्जकर्दम् कि गिरफ़ारशुदों में से किसी को सख्त अज़ीयत पहुंचाई जावे और वह हम सबों का नाम बतला दे तो फिर हम लोग क्यों कर भाग सकेंगे"?

मैंने कहा "तो फिर आप क्या सलाह करते हैं"?

उसने कहा "पहिले तो मैं भवानी को परशाद चढ़ाया चाहता हूं और इसके बाद जैसी सब लोगों की सलाह गिरफ़ारशुदों के रिहाई के लिये तज-वीज़ होगी की जायगी"।

मैंने कहा "तो आप बखुशी परशाद चढ़ाइये और रसूम अदा कीजिये। आप और मेरे वालिद सब जानतेही हैं। मेरी जहालत शायद आप के काम में हारिज हो इसलिये इसके खतम होने तक मैं दूर रहूंगा"।

उसने कहा "आप सही कहते हैं, शायद ऐसा हो मगर मैं इस बात से निहायत खुश हूं कि अब आप अक्लमंदी के साथ गुफ़गू करते हैं, आप के वा-लिद कहां हैं?"

मैंने कहा "वे अन्दर सोये हैं बेहतर है कि आप खुदही उनके पास चले जावें"।

खैर बद्रीनाथ और वालिद से मुलाकात हुई, बद्रीनाथ ने तमाम माजरा कह सुनाया। परशाद वगैरह और मामूली रस्में अदा करने के बाद सगुन देखा गया और उमदा निकला। मैं नहीं जानता कि क्या सगुन निकला क्योंकि मैं उस वक्त उसकी कुछ परवाह न करता था सो न तो मैं वहां गया और न मैंने उसके बारे में पूछा। कई बरसों के बाद जब मुझ पर आफतें और

तकलीफें थाईं तब मुझे इन सगुनों की ज़रूरत और कद्र मालूम हुई। इसमें कुछ शक नहीं कि यह सज़ा मेरी गुस्ताख़ी और नाएतक़ादी के लिये भवानी ने मुझ पर भेजा था। तब से ले कर आज तक मुझे सगुनों पर पूरा एतक़ाद है जैसा कि मैं आप को आगे सुनाऊंगा।

मेरे वालिद और बद्रीनाथ दोनों खुशी बखुशी मेरे पास आकर कहने लगे "कुछ परवाह नहीं, इतनी खफ़गी पर भी भवानी हम लोगों पर मिहर्बान है। सच तो यों है कि हम लोगों से कुछ न कुछ कसूर बन पड़ा था मगर अब भवानी राज़ी और खुश हो गईं"।

मैने कहा "बिहतर है तो अब हम लोगों को उन बिचारों की रिहाई के लिये कोशिश करना चाहिये, मगर वह कौन सी तरकीब है मैं नहीं जानता; हां, वे कब गिरफ़ार हुये बद्रीनाथ?"

उसने कहा "करीब आधीरात के"।

मैने कहा "तो इस वख़ वे कहीं न कहीं पहरे में होंगे और दिन के वख़ उनकी रिहाई करा लेना ग़ैरमुमकिन है। घूस देने की हिम्मत नहीं पड़ती क्योंकि लोग कहते हैं कि कोतवाल हुसैन अली खां निहायत दियानतदार शख़्स है। क्या आप कुछ बतला सकते हैं कि कब वे लोग कोतवाल के रूबरू पेश किये जांयगे?"

बद्रीनाथ ने कहा "मैं ठीक नहीं कह सकता मगर मैं अभी इस का पता लगा लाता हूं" यह कहकर वह बाज़ार में चला गया और फौरन् वापस आकर कहने लगा "मैने एक बुड्ढे बनिये से पूछा कि कोतवाल साहब का दरबार किस वख़ लगता है, उसने कहा कि रात को एक या दो बजे"।

मैने कहा "पस जबरदस्ती हथियार के जोर से उन की रिहाई कराना चाहिये और मैं खुद इसका जिम्मा लेता हूं"।

दोनों ने कहा "यह गैरमुमकिन है"।

मैने कहा "मैं जो आपसे कहता हूं आप यकीन रखिये मैं इस काम को कर लाऊंगा। हिम्मत खां कहां है? अगर वह छ सात होशियार आदमियों को लेकर मेरे साथ चले तो मैं ज़रूर इस कार में कामयाब होऊंगा, उनमे क्या से कोई कोतवाल का मकान जानता है"?

वे लोग बुलाये गये, मगर किसी को भी उस मुकाम से वाकफ़ीयत न थी।

मैंने कहा "तो मैं अभी जाता हूं और पता लगा कर तमाम बन्दोबस्त बांध फौरन् वापस आजंगा"।

बद्रीनाथ ने कहा 'तो मैं भी जाता हूं और अपने चंद होशियार शख्सों के साथ दोपहर तक वापस आ जाऊंगा"।

मैंने कहा "बेहतर है, मगर वे लोग अपनी ढाल तलवार भी साथही लेते आवें शायद उनमें से कोई शख्स हमारे साथ चलने की ख्वाहिश करे"।

उसने कहा "मीर साहब! एक तो मैंही हूं, आप के इस भाएतकाती पर भी मुझे आप की दिलेरी पर ज्यादातर भरोसा रहता है" इतना कह कर बद्रीनाथ हँसा।

मैंने कहा "मैं आपका मतलब समझता हूं आप मुझे माफ़ कीजिये"।

उसने कहा "भला मैं आपसे नाराज़ कब था"?

मैंने कहा "बेशक, मगर तो भी आप के नाराज़ी का बाइस था, वह मेरी बेवक़ूफी थी"।

वालिद ने पूछा "यह क्या? क्या तुम दोनों में कुछ तनाज़ा हो गया था"?

"जी कुछ नहीं" मैंने कहा "उसका अंजाम तो आप देखते ही हैं मगर अब नाहक देर हो रही है मैं रवाना होता हूं"।

यह कह कर मैं शहर में गया और बाआसानी एक शख्स से कोतवाल के मकान का पता देख आया। यह मकान एक लम्बी सी तंग गली के अन्दर था जहां का रास्ता बहुत कम चलता था, यह बात ठीक मेरे मतलब की थी क्योंकि भीड़ भाड़ के रास्ते में हम लोग कुछ भी न कर सकते। मैंने देखा कि अगर उन सिपाहियों पर जो हमारे साथियों के हमराह इधर से आवेंगे एक बयक हमला कियां जाय तो वे सब कैदियों को छोड़ अपनी जान बचा भागेंगे।

मैंने वापस आकर वालिद से तमाम अहवाल कह सुनाया। वे भी इस सलाह पर राज़ी हुये मगर उन्हें यह खतरा था कि शायद इस कोशिश में नाकामयाबी हो तो मैं भी आफ़त में फँस जाऊंगा क्योंकि मैं इस कार में खास शख्स था।

आखिरकार उन्होंने मुझ से कहा "मेरे फ़र्ज़न्द ये सब बुज़दिली के ख़्यालात हैं मगर बसबब तेरी मुहब्बत के मेरे दिल में आ ही जाते हैं, अल्लाह न करे कि इन का कोई असर तुझ पर हो; पस रसूलल्लाह के नाम पर रवाना हो और वही तेरा हाफ़िज़ और मददगार है"।

शाम के वक़्त मैं बद्रीनाथ और छ दूसरे राजपूतों को साथ लेकर रवाना हुआ इन में से दो शख़्सों ने इस बात की क़सम खाई कि वे नाकामयाबी के साथ लौटने की बनिस्बत लड़ कर मर जाना ज़्यादातर पसन्द करेंगे। ख़ैर हम लोग इलाहिदा २ हो कर शहर में दाखिल हुये मगर हर एक शख़्स आपस में आगे पीछे दूर ही दूर निगाह के अन्दर ही अन्दर चला आता था चलते २ हम सब उस गली में पहुंचे जहां कोतवाल का मकान था। यहां हम लोग कई घंटों तक इधर उधर वक़्त खोया करते रहे आखिरकार मैं उकता कर ख़्याल करने लगा कि या अल्लाह वे इधर से आवेंगे या नहीं या इस के पेश्तर उन का इन्साफ़ करके उनकी सज़ा कर दी गई। मैंने बहुतेरे लोगों के आने जाने से गुमान किया कि इस वक़्त दर्बार लगा है पर तो भी उन लोगों का कुछ पता न लगता था।

मैं चुपचाप एक तमोली की दूकान पर जो उस गली भर में एकही थी बैठा था कि हिम्मत खां मेरे पास आया। मैंने उसकी शकल से मालूम किया कि यह कुछ कहा चाहता है पस फ़ौरन् चबूतरे के नीचे उतर एक अंधेरे कोने में जाकर उस्से बातें करने लगा।

उसका दम जोश से फूल रहा था और वह कहने लगा "वे लोग आरहे हैं एक कोने पर मैं और दूसरे कोने पर खुशियाल सिंह खड़े देख रहे थे, वे मेरी तरफ़ से आ रहे हैं और आधे रास्ते पर आ भी गये होंगे।

मैंने पूछा "पहरे में कितने सिपाही हैं"?

उसने कहा "आह! करीब बीस या बाइस बेवक़ूफ़ सिपाही पुरानी बंदूके लिये हैं, ऐसे ऐसे अगर सौ होवें तो भी हम लोग उन्हें काट सकते हैं"।

मैंने पूछा "क्या उनकी संगीन चढ़ी हैं?"

उसने जवाब दिया "हैं तो सही पर उस्से क्या होता है? वे सब बुज़दिल हैं और आप देखियेगा कि हमारे टूटतेही भाग जांयगे"।

मैंने कहा "अच्छा दौड़ कर बद्रीनाथ से जो साम्हाने बैठा है इत्तला करो और कह दो कि वह उधर से आवे और मैं इधर से चलता हूं, जब हम लोग उनके नज़दीक पहुंचेंगे मैं झिरनी दूंगा"।

मेरे चारो शख्स मेरे साथ चल पड़े और मैंने उनसे कह दिया कि जब मैं किसी से बात करने लगूं तुम लोग फौरन् अपना काम शुरू कर देना, बद्रीनाथ के साथी उसके हमराह हो गये और खुशियालसिंह भी पहरा छोड़ उन्हीं में जा मिला। हम लोग सब के सब सड़क के दोनों तरफ कोने २ चले जाते थे। गोकि यह पहिला मर्तबः था कि मुझे इनसान् के मुकाबिले तलवार खींचना पड़ा तो भी मैंने खतरे का कुछ भी ख्याल न किया कि मुझे जी जान की बाजी लगा कर लड़ना होगा। हम लोगों की ढाल मामूली तौर से लटकती मालूम पड़ती थी पर दरहकीकत उसका मुट्ठा हर एक के हाथ में मज़बूती से गिरफ़्त था और दस्तगी हर एक तलवार की खुली थी। मैंने देखा कि वे लोग साथ गफ़लत के अपने ख्याल में चले आते हैं, और अगर हमारे तमाम साथियों की उलटी मुश्कें मज़बूती से एकही रस्सी में बंधी और सरदार के हाथ में गिरफ़्त न होतीं तो वे सब कभी भागकर बआसानी निकल गये होते।

इधर से हम लोग पहुंचे और उधर वे सब भी आये। यह मुकाम कुछ तंग था; मैंने ज़ोर से आवाज़ दी "भाई पान लावो"। बस यही झिरनी थी— फौरन् हम लोगों ने म्यान से तलवारें खींच लीं और सिपाहियों पर टूट पड़े।

मैंने दहिने और बांये दोनों तरफ़ काट की और दो शख्स गिरे, दूसरों ने भी वैसे ही हाथ मारे। मैं फ़ौरन् सर्फ़राजखां और उसके साथियों के पास पहुंचा और तलवार से रस्सियां काट दीं। हिम्मतखां का कहना सही हुआ, वे सब सिपाही कैदियों को छोड़ हमारे टूटते ही अपनी २ जान बचा कर भाग गये।

मैंने कहा "भाइयो भाग चलो वरनः फाटक बन्द हो जायंगे, इन्हीं अँधेरी गलियों से निकल चलो कोई भी हम लोगों को न पहिचानेगा और न खोजने की तकलीफ़ उठावेगा"।

बात की बात में हम सब छँट गये। मैंने अपनी खून भरी तलवार म्यान

करते वक़ निगाह की, देखता क्या हूं कि पांच घायल सिपाही ज़मीन पर पड़े कँहर रहे हैं। बस इतना काफ़ी था, मैंने भी एक नज़दीक का रास्ता लिया और उस फाटक पर पहुंचा जिधर से मैं अन्दर दाखिल हुआ था। जब मैं मीर जुमला के तलाव के बांध पर पहुंचा मैंने नीचे उतर बाग का रास्ता लिया और बहुतेरी गलियों से घूमता हुआ फ़ौरन् वालिद के मकान पर पहुंच गया।

साहब, सिपाहियों पर वह हमला इस तेज़ी और फुर्ती से हुआ कि उस का बयान मैं किसी तौर नहीं कर सकता बल्कि इसके बयान करने में ज्यादा वक़ लगता है। मुझे अक्सर इस बात पर ताज्जुब होता है कि मारा और राह चलतों का शोरोगुल सुन कर कितने ही लोगों ने अपने २ दर्वाज़े बंद कर लिये और कोई भी हमारी गिरफ़ारी के लिये न दौड़ा।

सुबह होते होते हमारे तमाम साथी अपने अपने मुकाम पर जा पहुंचे, मगर इस लिहाज़ से कि अब शहर में रहना महफ़ूज न होगा वालिद ने उन सभों को हुसैनसागर के खेमे में भेज दिया और कहा कि वहीं हमारे इन्तिज़ार ठहरना क्योंकि हम जानते थे कि वहां इन्हें तलाश करने कोई भी न जायगा।

अब हम लोगों को शहर में ठहरने की कोई ज़रूरत न थी फ़क़त उस माल को फरोख़ करना बाकी रह गया जो हम लोगों ने इधर दस रोज़ में जमा किया था जिन मे कोई बहुत बेशक़ीमती माल न था; चंद मोतियों की माला थोड़े दुशाले और कई एक बगैर जड़े हुये जवाहिर कीमती थे जो फ़ौरन् फ़रोख़ हो गये, बाकी सोने चांदी का माल हम लोगों ने गलाकर एकट्ठा थोक कर लिया।

उन्नीसवां पर्व्व।

अब मुझे फ़क़त दो काम बाकी रह गये; एक ज़ोहरा का पता लगाना दूसरे कमाल खां की हुंडियों का रुपया वसूल करना।

ज़ोहरा की तो मुझे बहुत कम उम्मेद थी क्योंकि बावजूद इसके कि जिस दिन से मैं उसके मकान से वापस आया मैं ने हरदम अपने भेदिये वहां लगा

रक्खे थे तौभी उसका या उस बुड्ढी का कुछ भी पता न लगा; इस बुड्ढी को मैंने बहुत कुछ दिया था और मुझे पूरी उमेद थी कि अगर मुमकिन होगा तो वह ज़रूरही मेरे माशूका की ख़बर मुझे देगी। मैं खुद कई मर्तबः उसी जानिब से गुजरा कि शायद कहीं ज़ोहरा इत्तिफ़ाक से नज़र आवे मगर यह बिलकुल फ़ज़ूल था और अब मुझे उसके मुलाकात की उम्मेद एक दम जाती रही। साहब मैं ज़ोहरा से इस कदर मुहब्बत रखता था कि अगर मुझे अपने वहशी रोज़गार का इस कदर शौक न होता तो मैं उसी वक्त से मजनू सा दीवाना होकर वीराने की सैर करता फिरता। फ़कत यही एक बाइस था कि मैं उस तबाही से बचगया। मुझे यह ख्याल हुआ कि मैं दूसरों की बनिस्बत अपने कार मे नीचा क्यों दे खूं और चूंकि यह तमाम गरोह मेरे मातहत है मुझे इनके लिये काम तलाश करना और हरदम नेक ओ बद में शरीक रहना चाहिये।

अपने उन साथियों के रिहाई के दूसरे दिन हमारे गरोह के तमाम खास अहबाब जमा हुये और एक कुमेटी की गई। इसके तूल बयान की कुछ ज़रूरत नहीं फ़कत इतना ही कहना काफ़ी है कि सब की यही राय हुई कि हम लोग बहिफ़ाजत यहां बहुत दिनों तक रह चुके और अब यहां से कल या हद परसों रवाना हो जाना चाहिये। हर एक फुटकर गरोह को यह हुक्म दिया गया कि वह इलाहिदा २ पट्टनचेरू से होते हुये बीडर का नज़दीकी रास्ता लेवे मगर पट्टनचेरू से तमाम गरोह मिल कर वहां से साथही डेरा कूच करे।

अब मुझे वक्त बहुत कम रह गया; पस मैं बद्रीनाथ और मोतीराम को साथ ले शहर को रवाना हुआ। हम लोग चारमीनार की सीढ़ियों पर जा बैठे। वहां सैकड़ों तरह की गप्प उस झगड़े की सुनने में आती थी जो हमारे और कोतवाल के सिपाहियों के दर्मियान हुआ था। कोई कहता पाचस या साठ सिपाही मारे गये कोई कहता हमने खुद देखा कि ४० आदमी कोतवाल के ज़ख्मी हुये। हर एक शख्स अपनीही तान गाता और अपने तईं चश्मदीद गवाह बतलाता या मोतबिर लोगों की ज़बानी सुना हुआ बयान करता। हम लोग यह गप्प सुन कर दिलही दिल खुश होते और उनकी बेवकूफी पर हंसते थे। मगर हम लोगों का मकसद इस गप्प के सुनने का न

था जिसमें एक ज़र्राभी सचाई की झलक न थी, हमारा इरादा उन हुण्डियों के वसूल करने का था जो हमने सैयद महम्मद अली उर्फ कमाल खां के हिमयानी में पाया था और खास इसी गरज़ से हम लोग चारमोनार को गये थे कि वहां कोई न कोई इनका पढ़नेवाला मिल जायगा।

वहां बैठे बैठे मैंने देखा कि एक गरीब सा शख्स पगड़ी के नीचे कान में कलम खोंसे दावात हाथ में लिये और कुछ कागज़ बगल में दबाये चला जाता है, मैंने ख्याल किया कि इसी से मेरा मतलब निकलेगा। ज्योंही उसने मेरी तरफ़ देखा मैंने उसे उँगली से इशारा किया और वह फौरन् मेरे पास आकर सलाम कर खड़ा हो गया।

मैंने उससे पूछा "तू गुजराती पढ़ सकता है?"

उसने कहा "जी हुजूर मैं पढ़ भी सकता हूं और लिख भी लेता हूं यह तो मेरी ज़बान ही ठहरी, हुजूर का क्या हुक्म है?"

मैंने कहा "फ़क़त एक हुण्डी पढ़ाना है और कुछ नहीं" यह कह कर मैंने एक हुण्डी उसे दे दी।

उसने कहा "जनाब, यह हुण्डी कमाल खां के लिये (मैं समझता हूं यह हुजूर का नाम है) नन्देर के बियारीमल ने बेगम बाज़ार वाले गोपालचंद बिशुनचंद के ऊपर लिखी है अङ्कन चार सौ मुद्दत नौ दिन की"।

मैंने पूछा "ठीक लिखा है न"?

इतना सुन कर वह उसे इधर उधर उलटने लगा और चारोतरफ से देख भाल कर बोला—

"तो क्या हुजूर को इसमें कुछ शक है?"

मैंने कहा "अल्लाह ऐसा न करे। अगर यह खोटी हुई तो मैं और मेरे ये साथी इस अजनबी मुल्क में मारे पड़ेंगे क्योंकि अभी इससे भी भारी हुण्डियां इसी किस्म की मेरे पास और भी हैं"।

उसने कहा "इसमें तो मैं कोई खोट नहीं पाता खैर आप और दिखलाइये"। मैंने बाकी की हुण्डियां भी उसे दिखलाईं।

उसने कहा "ये सब सही हैं फ़क़त आप इन्हें कोठी में ले जाइये वहां आप को रुपया मिल जायगा"।

मैंने पूछा "जिस कोठी के नाम ये हुण्डियां है? उन्हें लोग खूब जानते हैं न?"

उसने कहा "इनका देशी हुण्डियों ही का रोज़गार होता है इस्से और कोठियों की बनिस्बत कम मशहूर हैं पर तौभी यह कोठी बहुत मातबर है"।

मैंने पूछा "हां कहां तुमने इस कोठी का ठिकाना बतलाया"?

उसने कहा "बेगम बाज़ार में—हुजूर कहें तो मैं साथ चलकर दिखलादूं"

मैंने कहा "अच्छा चलो, हम लोग मुसाफ़िर हैं शायद जल्द पता न लगे—तुम्हारी इस मेहनत के लिये तुम्हे कुछ इनाम दिया जायगा"।

उसने कहा चलिये चारमीनार के आगे एक तंग गली से होते हुये दिल्ली-दर्वाज़े से निकल हम लोग शहर के बाहर हुये, वहां से बांई तरफ़ घूम दर्य्या के पार हो कर हम लोग अमीरों की एक घनी बस्ती में पहुंचे जहां वे महाजन रहते थे। तमाम सड़क अनाज के बोरे, सौदागरों की गठड़ियां और बैलगाड़ी से रुकी थी, एक तरफ़ गाड़ियां लदी चली जातीं और दूसरी तरफ़ खाली गाड़ियां चली आती थीं; भीड़ इस कदर थी कि हम लोग सब पास ही पास चलते थे, बाज़ार में कहीं खरीदारों और बेचनेवालों का शोर, कहीं बैलवालों की गालियां और हांकनेवालों का गुल, कहीं अनाज तोलने वालों की आवाज़ मिल कर इस क़दर शोरोगुल मच रहा था कि जो मैंने आज तक कभी न देखा था। ख़ैर किसी तरह लोगों को हटाते और धक्काधुक्की करते हम लोग एक आलीशान कोठी के दर्वाज़े पर पहुंचे, अंदर जा कर उस शख्स ने हमारी मुलाकात एक गुमाश्ते से कराई। मैंने निहायत संजीदगी से एक हुंण्डी निकाल कर उसे दी। साहूकार एक बुड्ढा शख्स था, उसने पगड़ी में से चश्मा निकाल नाकपर लगाया और निहायत होशियारी से हुण्डी पढ़ने लगा; बादहू उसने हुण्डी को चारो तरफ़ से खूब आज़माया और बार बार गर्दन उठा कर चश्मा लगाये हुआ मेरी तरफ़ शक से देख देख कर कुछ गौर करता था।

साहब, अगर मैं अकेला होता तो बेशक खौफ़ खा जाता मगर चूंकि मेरे हमराह दो साथी और थे मैंने कुछभी पर्वाह न की; अगर किसी किस्म का फसाद बर्पा होता तो हमने अपनी रिहाई तलवार के ज़ोर से की होती।

कुछ देर बाद साहूकार ने मुझसे कहा "अगर आप ज़रा इस कमरे में तकलीफ़ करते तो मैं आप से चंद बातें करता"। यह कह कर वह उठा और मैं उसके साथ साथ चला गया।

वहां जाकर उसने मुझ से पूछा "यह हुण्डी आपके पास क्यों कर आई? और आप कौन हैं?"

मैंने कहा "मैं कोई होऊं, आप के लिये इतना जानना काफ़ी है कि मुझे इसका और बाकी के हुण्डियों का भी रुपया मिलना चाहिये"—यह कह कर मैंने उसे बाकी की भी तमाम हुण्डियां दिखलाईं।

वह उन सभों को अच्छी तरह देख भाल कर कहने लगा "बड़े ताज्जुब की बात है, मुझे मुतलक समझ नहीं आता कि आपने ये हुण्डियां क्यों कर पाईं—मैं आप से यह पूछता हूं कि किस के हुक्म या इजाजत से आप यहां रुपया लेने आये हैं?"

मैंने कहा "उसके हुक्म से जिसके नाम ये हुण्डियां लिखी हैं"।

उसने कहा "अच्छा, उसका, और लिखनेवाले साहूकार का नाम बतलाइये"।

मैंने कहा "उसका नाम कमालखां—और साहूकार का बियारीमल"।

साहूकार ने कहा "नहीं नहीं इससे काम नहीं चलने का, आपने गलती की, लिखनेवाले साहूकार का नाम तो चाहे जिससे आप मालूम कर सकते हैं"।

मैंने कहा "तो शायद आप को इससे कुछ ज्यादातर एतकाद होगा" यह कह कर मैंने अपने कमरबन्द से सैय्यद की मोहर निकाल उसे दी।

उसने मोहर ले कर अच्छी तरह देखा और कमरे के अन्दर जाकर कुछ कागजात एक सन्दूक में से निकाल लाया। उसने फौरन् उसकी वर्क उलट कर कमाल खां का हिसाब निकाला और कहा—"यह देखिये—सैय्यद महम्मद अली का हिसाब, इस में उसकी बहुतेरी मोहर छपी हैं पस अगर यह मोहर नकली है तो अभी पता लग जाता है क्योंकि आपही सैय्यद साहब की मोहर देख लीजिये"—इतना कह कर उसने मुझे एक मोहर जो उ-

सकी कागजात पर लगी थी दिखलाई। साहब, मैं इकरार करता हूं कि मैं उस वक़ बड़े असमंजस में पड़ा क्योंकि अगर मैंने इत्तिफाक से गलत मोहर पाई होती तो बेशक मैं गिरफ़ार हो गया होता पर चूंकि कमालखां के पास उस वक़ दूसरी कोई मोहर न थी और यह मोहर मैंने खुद उसकी उँगली से उतारी थी मुझे कुछ शक न था। ज्योंही मैंने उसकी बही पर मोहर देखा मुझे एतकाद हो गया कि मेरी मोहर सही है।

साहूकार ने एक कागज़ के टुकड़े को ज़बान से ज़रा नम कर और मोहर पर स्याही लगा कर कहा "तो अब मैं इसे छापता हूं अगर आपने कुछ चालाकी की होगी तो फ़ौरन् मालूम हो जायगा। क्यों मैं इसे छापूं न?"

मैंने कहा "बेशक, मुझे क्या ज़रूरत है कि मैं आपको धोखा दूं। सैय्यद साहब ने मुझे यह मोहर फ़कत आप की तसकीन के लिये दी है"।

उसने मोहर को काग़ज़ पर दबाकर उठाया और नक्श दुरुस्त उतरा जो ठीक साहूकार के बही की मोहर से मिल गया।

उसे मिलता देख साहूकार ने कहा "ठीक है; गो कि मैं फ़ारसी नहीं पढ़ सकता मगर हरूफ़ और कद ठीक मिलता है। अब मुझे कुछ शक नहीं है तौभी यह बड़े ताअज्जुब की बात है"।

मैंने कहा "मैं सैय्यद साहब का बफ़ादार और मोतबिर गुमाश्ता हूं इसी लिये उन्होंने रुपयों के लिये खुद मुझे भेजा है, अगर आप न देवें तो वैसा कहिये मैं उन्हें लिख दूं"।

"नहीं नहीं" साहूकार ने कहा 'रुपया तयार है, मगर सैय्यद साहब खुद क्यों नहीं आये? हुंडी फ़कत उन्हीं के नाम की है"।

मैंने कहा "आपका फ़र्माना बजा है लेकिन अगर आप उनका भेद जानते हों जैसा कि मुझे मालूम भी होता है कि शायद आप वाकिफ़ हैं तो आप खूब समझते हैं कि इस वक़ शहर में उनके हाज़िर न होने का कोई खास बाइस है और चूंकि उन्हे रुपये की ज़रूरतदर्पेश है इसलिये मुझे आपके पास भेजा है"।

उसने पूछा "और वे कहां हैं?"

मैंने कहा "यह मैं आपको हर्गिज़ नहीं कह सकता और न किसी दूसरे

को बतलाऊंगा। आपको फ़कत इतनाही बतला सकता हूं कि जब ठीक वक़ आवेगा तो वे आपही पोशीदगी के मुकाम से निकल आवेंगे" साहब, इसमें मैंने कुछ दरोग़ भी न कहा। आख़िर तो वह हशर के दिन उठेहीगा न?

इतना कह कर अमीरअली अपनी चालाकी पर खूब हँसा और कहने लगा—

साहूकार ने कहा "अच्छा, तो आपके रुपये में अब कुछ शक नहीं। मगर आपको चाहिये कब? इन हुंडियों में नौ दिन की मुद्दत है"।

मैंने कहा "इसीदम" मुझे मुतलक़ वक़ नहीं है मैं कल अलस्सुबह रवाना हो जाऊंगा, आप नौ दिन का सूद बेशक काट लीजिये, मगर ठहरिये चलते वक़ सैय्यद साहब ने मुझ से कह दिया था कि अगर आपका कुछ बाकी हो तो आप इन रुपयों में से काट लेवें और अगर उनका कुछ आपके जिम्मे निकलता हो तो उसे देकर पिछला हिसाब साफ़ कर दीजिये।"

"बहुत अच्छा" साहूकार ने कहा "मैं देखता हूं" यह कहकर वह बही के वर्क़ उलटने लगा और हिसाब निकाल कर बोला "यह देखिये सैय्यद साहब का हिसाब है—आख़िरी बाकी जो सफ़र महीने की पंद्रहवीं को निकली, करीब एक बरस हुआ उस में उनका तीनशौ बारह रुपया चार आना हमारी तरफ़ निकला था"।

मैंने कहा "बेहतर है तो अब मुझे रुपया दीजिये और एक रसीद भी लिखिये मैं उस पर मोहर करदूं क्योंकि मैं इसे वापस ले जाऊंगा"।

साहूकार ने एक शख्स को अन्दर से बुलाकर कहा "यह लो इन हुंडियों को बही पर चढ़ा लो और रुपया गिनकर एक रसीद भी तयार कर दो, ये मोहर करके आपको दे देंगे" फिर उसने मुझसे पूछा "हां आपका नाम क्या है"?

मैंने कहा "मुझे लोग अमीरअली कहते हैं, मैं एक फ़कीर नाचीज़ सैय्यद हूं"?

रुपया उसी वक़ गिना गया और सूद का कुछ थोड़ा बहुत काट कर मेरे सुपुर्द कर दिया गया। मैंने सैय्यद और अपनी दोनों की मोहर रसीद पर क-

रही और जब देखा कि साहूकार ने बही में हिसाब साफ़ कर लिया तो बे-फ़ायदा देर करने की कोई ज़रूरत न थी।

साहूकार ने मुझ से पूछा "ये कुल रुपये आप क्यों कर ले जायंगे, शाम हो गई और ऐसे वक़्त में इतनी जोखिम लेकर यहां से बाहर निकलना वाजिब नहीं है"।

मैने कहा "आप बेफ़िक्र रहिये हम तीन शख्स इस माल की हिफ़ाजत के लिये मज़बूत और काफ़ी हैं"?

उसने कहा "ख़ैर कुछही हो बेहतर होगा कि आप मेरे भी दो शख्स हिफ़ाजत के लिये साथ लेते जावें"?

इतने में वह शख्स जिसे हम साथ लाये थे बोल उठा "अगर मुझे हुक्म दीजिये तो मैं भी कुछ उठाले चलुँ सेठ साहब। भगवान जानता है कि आज मैंने कुछ भी नहीं खाया और न कहीं कुछ ठिकाना था कि नारायन ने इन भले आदमियों को भेज दिया और अब मुझे उम्मेद है कि जो कुछ इन्हों ने कहा है उस्से कुछ न कुछ ज्यादाही मुझे मिल जायगा"।

मैंने कहा "अच्छा, तू कितना उठा सकता है"!

"दो हज़ार" उसने कहा।

मैंने कहा "बहुत अच्छा तो वह थैली उठा ले"। बाकी का रुपया हम लोगों ने तकसीम कर उठा लिया और साहूकार से तस्लीमात कर रवाना हुये जिधर से हम लोग गये थे उधर से वापस न आये बल्कि अंगरेज़ी रेसिडेण्ट के बंगले के पास से पुलपर होते हुये चन्दतंग गलियों से निकल शहर के बाहर हुये। रास्ते में मैने बद्रीनाथ से रमासी ज़बान * में जो मैने सीख ली थी कहा "इस शख्स का भी काम तमाम करना चाहिये क्यों कि हमारा भेद साहूकार तक ठीक था इसके जानने से बेहतर न होगा। आप की क्या सलाह है"?

उसने कहा "मेरी भी यही राय है, इसकी लाश को किसी कूयें में डाल देगें, एक तो रास्तेही में पड़ेगा, आज सुबह को मैं वहां नहाया था"।

* यह ठगों की ख़ास ज़बान है?

मैंने कहा "बहुत अच्छा जब वह मुकाम आवे आप झिरनी दीजियेगा, उसकी मेहनत और रुपया उठाने की तकलीफ़ का तमाम हिसाब मैं उससे तै कर लूंगा"।

चलते २ कूयें के पास पहुंचे और बद्रीनाथ ने झिरनी दी, मैंने फ़ौरन् रूमाल उसके गले में दिया और चूंकि तोड़े की थैली उसके कंधे पर थी रूमाल भरपूर न बैठा, वह बहुतेरा छटपटाया मगर क्या होता है। मेरे हाथ तले पड़ कर शैतान का भी बचना दुश्वार है उस बिचारे की क्या हकीकत थी। हमने उसके कपड़ों में एक बड़ा पत्थर बांध कर उसी कूयें में डाल दिया ताकि वह तह में बैठ जावे।

"साहब, ताज्जुब की बात है कि बावजूद इस के कि वह अपनी इतनी ग़रीबी और मुफ़लिसी बयान करता था, हमने ४३) रु० उसके कमर में पाये"।

आप ख्याल कर सकते हैं कि मेरी इस कामयाबी पर वालिद किस कदर खुश हुये। उन्होंने मेरी चालाकी और अक्लमन्दी की कदरदानी में मुझे उसी वक्त ५००) रुपये दिये और बहुत तारीफ़ की।

अब तो मुझे फिर यह ख्वाहिश हुई कि इन रुपयों की मदद से आखिरी कोशिश ज़ोहरा के लिये करना चाहिये, मुझे यह ख्याल हुआ कि शायद मैं उस बुड्ढी को जो अपने तईं ज़ोहरा की मां बतलाती थी कुछ घूस देकर फुसला सकूं और चूंकि चिराग़ जल गया था मैं वालिद से कुछ बहाना कर शहर को रवाना हुआ। कुछ देर बाद उसी गली में जा पहुंचा देखता क्या हूं कि दर्वाज़ा खुला है; मैं फ़ौरन् अंदर दाखिल हुआ और जीने से चढ़ कर ऊपर पहुंच यकायक उस बुड्ढी और ज़ोहरा की बहिन ज़ीनत के रूबरू जा खड़ा हुआ।

वे दोनों मुझे देखतेही उठ खड़ी हुईं और बड़े अदब और मुहब्बत से दोनों ने मेरा इस्तकबाल किया। वह बुड्ढी मेरी बलायें ले कर बोली "मीर साहब, मोहर्रम की रोज़ से आप इतने दिनों तक कहां तशरीफ़ रखते थे? हम सब उसी रोज़ से आपके इन्तिज़ारी का दम भर रही हैं। यह बेगानगी और इलहदगी आप ने क्यों इख़्तियार की?"

मैंने देखा कि इस वक्त दर्वाज़े से निकाले जाने की शिकायत करना वा-

जिब न होगा इसलिये मैंने कहा 'मैं किसी ज़रूरी काम से शहर के बाहर गया था और अभी सीधा आप ही के पास मुलाकात के लिये चला आता हूं, अम्मा! यह कहो कि ज़ोहरा कहां है? बुलबुल को गुल से क्यों इलहिदा कर रक्खा है?"

"ज़ोहरा!" उस बुड्ढी ने कहा "अभी तक आपको उस बेवकूफ़ छोकड़ी का ख्याल बना है? क्या ज़ीनत बी नहीं है जो आप के लिये मरी जाती है? मीरसाहब जब से इसने आप की सूरत देखी है दीवानी बन गई है"।

"तोबा! तोबा!" ज़ीनत ने नाज़ से मुस्करा और मुंह ढक कर कहा— "छि! छि! अम्मा क्या कहती हो? क्यों इतना झूठ बोलती हो?"

उस बुड्ढी ने कहा "मैं सच कहती हूं मीरसाहब! आप की खूबसूरती देख इस बेवकूफ़ लड़की का दिमाग़ फिर गया है"—इतना कह कर वह मेरे गाल पर प्यार से चुटकियां भरने लगी।

अब मैं क्या करूं? मैंने देखा कि अगर मैं ज़ीनत की झूठी मुहब्बत नहीं दिखलाता तो यह ज़ोहरा का भी कुछ हाल न सुनावेगी; मगर मैं क्या उसे भूल सकता था मैं उसकी मुहब्बत के आगे ज़ीनत पर नफ़रत करता था। मैंने ख्याल किया कि अब फौरन् शर्तें तै करना चाहिये।

मैंने कहा "अम्मा! मैं आप की लड़की के मुहब्बत से निहायत खुश हूं और उसकी मुहब्बत भी वाजिब है, ताहम् मैं ज़ोहरा को नहीं भूल सकता, तुम्हें मेरे जान की कसम सच कहो उससे मुलाकात होगी या नहीं?—मेरी बात सुनो, मैं कुछ बहुत दौलतमन्द नहीं हूं कि हज़ारों रुपये उसके लिये खर्च सकूं मगर जो कुछ मेरे पास है वह सब उस का और तुम्हारा है बशर्तें कि तुम उसे मेरे सुपुर्द कर दो। कहो तुम्हारी क्या मर्ज़ी है?"

उसने कहा "अच्छा आप क्या देते हैं? मैं समझती हूं कि शायद आप इसी शहर के कोई रईस हैं और सूरत तबदील कर यह बात तै कराने आये हैं"।

मैंने कहा "नहीं मैं यहां का कोई रईस नहीं, मैं तो एक ग़रीब सैय्यद हूं। मैं ५००) रुपया तुम्हें दे सकता हूं बशर्तें कि तुम हमेशा के लिये ज़ोहरा को मेरे सुपुर्द कर दो। अगर तुम ज़बान दो तो मैं कल सुबह हाज़िर होऊं, यहीं पर एक मुल्ला बुला कर निकाह पढ़ा लिया जायगा"।

उसने कहा "पांच सौ रुपये!" और वे दोनों खूब कहकहा मार कर हँसने लगीं। फिर वह बुड्ढी बोली "आप कुछ नशे में हैं या आप का मिज़ाज खफ़ हो गया है?"

मैंने गुस्से से जवाब दिया "नहीं मेरे होश तो दुरुस्त हैं शायद तुम्हीं दोनों को कुछ खफ़ान सवार हुआ है"।

उस बुड्ढी कम्बख़ ने कहा "अगर योंही है तो आप को क्या हुआ है? क्या आप समझते हैं कि मैं फ़कत पांच सौ ठिकड़ियों पर ज़ोहरा को दे दूंगी? पांच हज़ार या इसका दूना भी तो दे कर पहिले देखिये।"

मैंने कहा "तो तुम दोनों शैतान की बच्ची हो और मैं तुम पर थू करता हूं। अभी कुत्ते के माफ़िक दर्वाज़े से मुझे निकाल तेरा दिल नहीं भरा और अब तू मुझे उस आराम से भी महरूम किया चाहती है जो फ़कत एक ही इस दुनिया में मेरे लिये है। हा! क्या औरतों को खुदा ने दिलही नहीं दिया?"

उस बुड्ढी खाला ने गुस्से से कहा "हां हमने तुझे निकाल दिया और अब फिर निकालती हूं, निकल जा यहां से, और अगर फिर कभी तूने मेरे मकान पर आज के माफ़िक पैर धरा तो तुझ कुत्ते और कुत्ते के बच्चे का सिर लाठियों से तुड़वा दूंगी"।

"चुप रह कम्बख़ रांड़" मैंने कहा "खबरदार ज़बान सम्हाल कर मेरे वालिद के बारे में कुछ कहियो"।

उसने कहा "उस के मुंह में ख़ाक उस की कब्र को खुदा गारत करे!। तेरी मां—"

तब तो मैं हर्गिज़ बर्दाश्त न कर सका, फ़ौरन् दर्वाज़े की तरफ़ दौड़ एक जूता हाथ में उठा कहने लगा—

"बस अगर फ़िर लाज़बान कहेगी तो जूतों से तेरा मुंह तोड़ दूंगा"।

वह फिर मुझे गालियां देने लगी और मुझे सख़ गुस्सा आया। मैं हर्गिज़ अपने तईं रोक न सका मैंने उस के मुंह पर थूक दिया और जूते से धड़ाधड़ पीटने लगा। ज़ीनत यह देखकर नीचे सीढ़ियों पर भागी और ज़ोर से चिल्लाने

लगी—"चोर! चोर!! मारे डालता है, दौड़ियो दौड़ियो, ए कासिम! ए मोहम्मद-अली कहां गये? हमें बेइज़्ज़त कर डाला, तलवार लाओ, मारो इसे, दौड़ियो २"।

तब तक मैंने उस बुड्ढी रांड़ को खूब पीटा और देखा कि अब भागना चाहिये; मैंने फ़ौरन् दर्वाज़े का रास्ता लिया और ज़ीनत को पकड़ एक तरफ़ ढकेल दिया। मैंने देखा कि वह बड़े ज़ोर से गिरी और मैं नीचे सीढ़ियों पर भागा। आधी दूर सीढ़ियों पर मुझे एक शख़्स नंगी तलवार लिये मिला, वह मुझ पर वार करनेही को था कि मैंने उसका हाथ पकड़ नीचे ढकेल दिया। वह लुड़कता हुआ दर्वाज़े पर जा पड़ा मैंने फ़ौरन् उस पर से उछल दर्वाज़े के बाहर निकल एक तरफ़ का रास्ता लिया।

रास्ते में मैंने ख्याल किया कि खूब हुआ गोकि ज़ोहरा मुझे न मिली मगर मैंने उस बुड्ढी कम्बख़्त को जूतों से खूब पीट अपना दिल भर लिया; बद्रीनाथ मेरा यह हाल सुन कर खूब हँसेगा।

बीसवां पर्व्व

मैं एक रईस के रौनक़दार मकान के फाटक के नीचे से चला जाता था कि एकबयक एक मीठी सी धीमी आवाज़ मेरे कान में यों पड़ी कि "अल्लाह के वास्ते मेरे साहब, ज़रा इधर आइये और मेरी मल्का की रिहाई कीजिये"।

मैंने ख्याल किया कि क्या कोई नया माजरा आया, देखता क्या हूं कि एक नौजवान लड़की मज़दूरनियों का लिबास पहिने खड़ी है। मैंने पूछा "तू कौन है?"

उसने कहा "मैं कोई होऊं आप ही न कल तीसरे पहर दो शख़्सों के साथ इधर से जाते थे?"

मैंने कहा "हां, मगर इससे क्या?"

उसने कहा "बस यही तो सब कुछ है मेरी मल्का जिस की खूबसूरती के आगे माहताब भी मात है आप को देख कर दीवानी हो गई है"।

मैंने कहा ' मैं निहायत अफ़सोस करता हूं मैं नहीं जानता कि मैं क्यों कर उसकी मदद कर सकूं" ।

उस लौंडी ने कहा "मगर आप को बेशक मदद करना होगा वरना वह मर जायगी। आप मेरे साथ ही साथ चले आइये मैं आप को ले चलती हूं"।

पहिले तो मुझे कुछ ताअम्मुल् हुआ क्योंकि मैंने अजीब किस्से सुने थे कि क्यों कर बदमाश औरतें मर्दों को फुसला कर मकान के अन्दर ले जाकर मार डालती हैं । मगर यह ख्याल फ़कत लहमें भर का था, मैंने अपने दिल में कहा "अमीरअली, हिम्मत कर और किस्मत पर एतकाद रख के चल; इन्शा-अल्ला कुछ नया तमाशाही देखने में आवेगा"।

मैंने उस लौंडी से कहा "देख, ख़बरदार मेरे पास तलवार है अगर किसी किस्म का ख़तरा होगा तो जो मेरे साम्हने आवेगा उसी के गर्दन पर यह तलवार बैठेगी" ।

उस लड़की ने कहा "आप के सिर की कसम कुछ भी ख़तरा नहीं है। मालिक-मकान अपने तमाम आदमियों के साथ बाहर गये हैं, घर में सिवाय मेरे दो लौंडियों और तीन बुड्ढी औरतों के और कोई नहीं है" ।

मैंने कहा "तो अच्छा चल मैं तेरे पीछे चलता हूं" । वह मुझे फाटक के अन्दर से एक आलीशान दालान में ले गई जहां एक निहायत खूबसूरत नौ-जवान लड़की उम्दा लिबास पहिने बैठी थी । मुझे देखते ही उसने फ़ौरन् दुपट्टे से मुंह ढाँक लिया और कहने लगी "या अल्लाह ये तो वेही हैं, क्या मैं ऐसी खुशकिस्मत हूं" ।

मैंने कहा "बेशक यह गुलाम आप के कदमों पर है और अर्ज़ करता है कि इस बुर्क़ो को दूर कीजिये जिसने सच्चे मोत्तकिद के निगाह से हूरेबिहिश्त को छिपा रक्खा है" ।

उसने आहिस्ते से कहा "ज़रा हट जाइये, मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं आप की तरफ़ निगाह उठा सकूं" । अल्लाह के लिये ज़रा हट जाइये आप अपने दिल में क्या ख्याल करती होंगी ?"

मैंने कहा "मैं यही ख्याल करता हूं कि मैं निहायत खुशनसीब हूं, मैं अर्ज़ करता हूं कि अगर आप मुझे हटायाही चाहती हैं तो एक मर्तबः मेरी तरफ़ निगाह कर दीजिये'।

उसने कहा "नहीं मैं निगाह नहीं उठा सकती! आह! हाई यह तूने क्या किया ?"

उस बुढ्ढी ने जो वहां खड़ी थी मुझे बुर्का हटाने का इशारा किया और मैंने धीरे से उसे हटा दिया। उसने आहिस्ते से मुझे रोका मगर यह फ़ुजूल था। मैंने फ़ौरन् उसे हटा दिया और उसने एक मर्तबः आहू सी आंखे मेरे रूबरू कर शर्म से गर्दन झुका ली। मैंने उसी दम उसे सीने से लगा लिया"।

उस बुढ्ढी ने कहा "दुरुस्त है, मैं ऐसा ही खुशमिजाज जवान पसन्द करती हूं माशाअल्लाह यह तो अजब आदमी है। यह कह कर वह मेरे पास आ बलायें ले कहने लगी—

'तो अब मैं जाती हूं, रात ज्यादा हुई जाती है अभी तुम्हें बहुत कुछ बातें करना है"।

"नही नहीं उसने कहा" मुझे अकेली छोड़ कर न जाओ"।

उस बुढ्ढी ने कहा "चुप रहो क्या बकती हो" फिर मुझ से कहने लगी "आप इसकी न सुनिये" यह कह कर वह दालान के बाहर चली गई"।

मैंने कहा" प्यारी, तुम डरती क्यों हो ? अपने दिल का अहवाल मुझ से कहो न !"।

उसने कहा" साहब, मैं नहीं समझती कि आप मेरे बारे में क्या ख्याल करते होंगे और मैं नहीं कह सक्ती की क्यों कर मैं कल आपको इधर से जाते देख जी जान से आप पर फ़रेफ़्ता हो गई। आप की खूबसूरती देख मेरा दिल पानी पानी हो गया और मैं आप के फ़िराक़ में इस कदर गल गई कि मेरी सहेलियों को मेरी जान का खतरा मालूम हुआ। वे मुझ से बोलीं कि हम सब उनकी तलाश करती हैं, पस अल्लाह ने मेरी दुआ कबूल कर आप को भेज दिया"।

मैने कहा "मैं तो तुम्हारा गुलाम हूं मैं बुलबुल और गुल के मुहब्बत के मानिन्द तुम से मुहब्बत रखता हूं। कहो अब मुझे क्या हुक्म देती हो?"

उसने कहा" तो मेरा अहवाल सुनिये, और तब आप जानेंगे कि मुझ पर किस क़दर रहम करना चाहिये। मैं उसे मुख़्तसर में बयान करती हूं मेरे मां बाप निहायत ग़रीब थे, जैसी मैं हूं आप देखतेही हैं लोग कहते हैं कि मैं खूबसूरत हूं—लोगों की ज़बानी सुनती हूं कि उन्हों ने मेरे शौहर से शादी कर दी मगर दरहक़ीक़त उन्होंने मुझे बेच डाला। साहब, मेरा शौहर निहायत ज़ईफ़ और ज़ालिम है उसने मुझे जूतों से मारा और अब मैंने क़ुरान ले कर क़सम खाई है कि उस के मकान में न रहूंगी। चूंकि मैं क़सम खा चुकी थी। मैं कलही भाग गई होती मगर कल मुझे आप नज़र आगये और मैं अल्लाह से यही दुआ मांगती थी कि वह आप को भेजदेवे। अब आप मुझे चाहे जो ख्याल करें मगर मेरी रिहाई कीजिये। इतना कह कर वह उठ खड़ी हुई और मेरे क़दमों पर गिर पांव से लिपट रोकर कहने लगी "अब आप हर्गिज़ मुझे पनाह देने से इनकार न करेंगे अगर आप का दिल सख़्त है तो फ़क़त एक ही बात मेरे लिये बाक़ी है, मैंने ज़हर का प्याला तयार कर रक्खा है बस कल सुबू तक मुझे कोई भी जीता न पावेगा।"।

मैने कहा "बीबी, अल्लाह ऐसा न करे, वह शख़्स जिसे खुदा ने भेजा है दिलेर और हिम्मतवर गुलाम है, इसी वक़्त मेरे साथ भाग चलो, मैं तुम्हें आपने वालिद के पास ले चलूंगा वे तुम्हें देख निहायत खुश होगें और हम दूसरे मुल्क को यहां से सैकड़ों कोस के फ़ासिले पर निकल जांयगे जहां तुम्हारे शौहर को मुतलक़ पता न मिलेगा"।

उसने कहा अभी? - इतनी जल्दी?"

मैंने कहा "हां इसी वक़्त मैं जान की बाज़ी लगा कर तुम्हारी हिफ़ाज़त करूंगा"।

उसने कहा "साहब, मेरी हिम्मत नहीं पड़ती, आह अगर कोई देख लेगा तो क्या होगा? आप तो भाग जाइयेगा—मगर आप जानते ही हैं कि फिर मेरी क्या हालत होगी?"

मैंने कहा "तो फिर क्या किया जाय? अफ़सोस कि मैं इस शहर में मुसाफ़िर हूं और दूसरी क्या राय दूं?"।

उसने कहा "अच्छा मैं दाया को बुलाती हूं जो वह करे सो ठीक-अरी कुछू?

इतने में वह बुड्ढी आकर पूछने लगी "क्या हुक्म है?

मैंने कहा" सुनो, मैं तुम्हारी इस बीबी को दिलोजान से प्यार करताहूं—यह मुकाम मुहब्बत का नहीं है क्योंकि यह जाय खतरे की है पस यहां से भाग चलना चहिये मै इस शहर में मुसाफ़िर हूं और इसी वक़्त अपने वतन हिन्दोस्तान को रवाने होने वाला हूं वहां मैं इसे बहिफ़ाजत ले जाऊंगा यह भी मेरे साथ चलने को राज़ी है, बस फ़कत तुम्हारी मदद और सलाह की ज़रूरत है"।

उसने कहा "तमाम घर बार छोड़ कर बेगाने शख्स के साथ हिन्दुस्तान भाग चलने की सलाह? अज़ीमां बी यह सरासर पागलपने की बात है? तुम क्या जानती हो कि ये कौन हैं और तुम्हें कहां ले जाँय? मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती। मेरी ख्वाहिश यही थी कि तुम्हरे लायक कोई जवान तुम्हें मिला दूं और वह मैंने मिला दिया; मगर यह पागलपन मुझे एक दम नापसन्द है—इसमें तो तमाम घर तबाह हो जायगा"।

मैंने कहा" अम्मा, मैं कोई धोखेबाज़ नहीं, मैं तुम्हारे सरोचश्म की कसम खाता हूं कि मैं वफ़ादार हूं। ज़रा हम दोनों मुहब्बतवालों की मदद करो और जब तक हम जीते रहेंगे, हमेशा रसूलल्लाह से तुम्हारे लिये दुआ माँगते, रहेंगे। मैं कल यहां से रवाना हो जाऊंगा—मेरे वालिद सौदागर हैं और वे भी मेरे साथ चलेंगे। हम दोनों के लिये उनके पास बेशुमार दौलत है क्योंकि फ़कत मैं ही उनका एक लड़का हूं। हम लोग बहुत जल्द दूर निकल जायगे और खुशी-बखुशी तुम्हारी इस मदद के लिये तुम्हें दुआ करेंगे। अब तुम क्या तरकीब सोचती हो? क्या गोलकण्डे के रास्ते मे कोई ऐसा मुकाम है जहां हमारी तुम्हारी मुलाकात होने के लिये ते किया जाय? मैं तुम्हें इस के लिये अच्छा ईनाम दूंगा और और अगर कोई तरकीब निकालो तो मैं इसी दम तुम्हें १००) देता हूं"।

मेरे इस कहने पर अज़ीमां को बड़ी हिम्मत हुई और वह बुड्ढी के कदमों पर गिर कहने लगी। कुलू! तुम तो मुझे बचपन से जानती हो, क्या मैं तुम्हें उस वक़ से प्यार नहीं करती? अफ़सोस मेरे मां बाप कोई भी नहीं है, तुम देखती ही थीं कि उसने मुझे इस वक़ जूतों से मारा—क्या मैंने तुम्हारे साम्हने उसके घर छोड़ने की कसम नहीं खाई? और क्या तुमने भी मेरे सर की सौगन्द नहीं की तुम मेरी मदद करोगी?"।

उसने कहा "तो मैं क्या कर सकती हूं? मैं क्या करूं? अफ़सोस मैं लाचार हूं मुझ जैसी बुड्ढी और क्या कर सकती है?"

मैंने कहा "जो तुम करोगी सोई होगा—मौके पर औरतों की अक्ल कभी खाली नहीं जाती"।

अज़ीमां ने कहा "अम्मा तुमने 'हुसैनशाह वली' के दर्गाह की मन्नत मानी थी न? कि जब मैं बीमारी से आराम होजंगी तो तुम मुझे ले चलकर वलीसाहब की नज़र चढ़वाओगी?"

उसने कहा "हां, मेरे गुल! ठीक कहा, मैं तो अपनी मन्नतही भूल गई थी। साहब, क्या आप कल दोपहर की वक़ दर्गाह में मुझे मिल सकते हैं?"

मैंने कहा "बेशक मैं हाज़िर होजंगा—देखो भूलना मत, मैं उस सौ के सिवाय पचास रुपये और भी तुम्हारी नज़र करूंगा"।

उसने कहा "खुदा आप पर रहमत करे और आप की सखावत की रोज़ बरोज़ तरक्की हो। साहब, मैं इस लड़की को बचपन से प्यार करती हूं, गोकि इसकी जुदाई का सदमा मेरे दिल पर निहायत सख़ होगा तोभी मैं इसे आप के हाथ में सुपुर्द करना बेहतर समझती हूं बनिस्बत इसके कि वह ज्यादातर बेइज्ज़ती इस बुड्ढे के हाथों से बर्दाश्त करे"।

मैंने कहा "शुक्र है, मैं तुम्हारा एतकाद करता हूं मगर तुम इसके सिर की कसम खाओ कि तुम अपना वादा पूरा करोगी"।

उसने अज़ीमां के सर पर हाथ रख कहा "मैं इसके सर की कसम खाती हूं कि यह तुम्हारी हो चुकी"।

मैंने कहा "बस, अब मुझे पूरा एतकाद हुआ अब मैं एक मर्तबः मिलकर

रवाना होता हूं । मेरे वालिद मुझे तलाश करते होंगे, उन्हें इस बात का खौफ़ होगा कि कहीं इस बदज़ात शहर में किसी ने मुझे मार न डाला हो"।

साहब, मैंने अजीमां को निहायत मुहब्बत से देर तक सीने से लगा लिया और तब यों कह कर उससे रवाना हुआ ।

"अब कल जो दर्गाह में मुलाकात होगी तो अल्लाह चाहेगा तो फिर जुदाई न होगी । मेरी प्यारी अब तुम खुश हो और हिम्मत रक्खो । कल का दिन हम लोगों के लिये निहायत खुशी का होगा और मैं अल्लाह से दुआ मागता हूं कि हम दोनों कामयाब हों"।

उस बुढ्ढी ने कहा "बेशक, बेशक, यहां किसी से खौफ़ न कीजिये । नर्गिस भी वफ़ादार है वह भी हमारे साथ चलेगी, बाकी के तमाम लोग मुद्दत हुई सो गये हैं और आप के यहां आने का हाल कोई नहीं जानता । मगर अब देर न कीजिये, यह मुकाम खतरे का है नर्गिस आप को सड़क तक पहुंचा देगी"।

उसने नर्गिस को पुकारा और वही लड़की जो मुझे अन्दर लिवा ले गई थी आकर हाज़िर हुई और मुझे दर्वाज़े तक पहुंचा कर बोली—

"मियां आप को अपने जान की कसम, अपने वालिदैन की कसम, देखिये वादे पर ज़रूर वहां रहियेगा वरनः उसका जीना दुश्वार होगा"।

मैंने कहा "बीबी मुझे किसी कसम की ज़रूरत नहीं तुम्हारी मल्का ने मेरे दिल को पानी पानी कर दिया है और मैं उस का हमेशा के लिये हो चुका"।

उसने कहा "तो बस यही आप का रास्ता है खुदा हाफ़िज़"।

मैं फ़ौरन् उससे रवाना हो कर खेमे में पहुंचा । वालिद सोये थे मैं भी लेट रहा, लेकिन अल्लाह ! अल्लाह ! साहब, क्यों कर मेरा दिल धड़कता और सीना उछलता था । मुझे हज़ारों मर्तबः यही ख्याल उठता कि मैं उस परी को अपने साथ क्यों न ले आया, मैं बारहा अपनी बेवकूफ़ी पर अफ़सोस करता कि मैं उसे क्यों छोड़ आया, मुझे फ़कत ज़ुबान हिलाने की देर थी और वह घरबार छोड़ मेरे साथ हो जाती, मगर अब देर बहुत हो गई थी । इसी तरह हज़ारों किस्म के ख्यालात करते २ सो गया और कितने ही ख्वाब देखे ।

देखता क्या हूं कि गोया अज़ीमां का शोहर हमारे ऐन आराम के वक़्त आकर तलवार खींच अपनी इज़्ज़त का एवज़ लेने को मुस्तैद है। फिर क्या देखता हूं कि दर्गाह के मुल्लाओं में से एक शख़्स उसका शोहर है और ज्योंही अज़ीमां गाड़ी में सवार हो कर रवाना होने को थी कि उसके शोहर ने आकर उसे गिरफ़्तार कर लिया और मैं उसकी रिहाई के लिये झगड़ने लगा। इस जोश में मेरी आंख खुल गई देखता क्या हूं कि वालिद खड़े हैं।

मुझे जागते देख वे बोले "रसूलिल्लाह के लिये फ़र्ज़न्द अमीरअली। तेरा क्या हाल है? नमाज़ का वक़्त हो गया और मैं तुझे जगाने आया था देखता हूं कि तू ख़्वाब में किसी का नाम पुकार पुकार कर बड़ी कोशिश कर रहा है मैं ठीक उसका नाम न समझ सका मगर कुछ अज़ीमां सा सुन पड़ता था? तू क्या कर रहा था? क्या रात को कोई बनिज तेरे हाथ लगा?"

साहब, हम लोग अपनी ज़ुबान में अपने शिकार को "बनिज" कहते हैं— मुझे यह लफ़्ज़ सुनते ही कुछ थरथराहट सी आ गई और मैंने कहा—

"जी नहीं—कुछ नहीं चलिये मैं वज़ू कर के अभी नमाज़ में शरीक होता हूं। मेरी तबीयत दुरुस्त होने पर मैं आप से तमाम अहवाल अर्ज़ करूंगा"।

नमाज़ खतम होने के बाद मैंने रात का तमाम अहवाल उन्हें कह सुनाया। ज़ोहरा के मां के पीटे जाने का हाल सुन कर वे खूब हँसे और बोले कि तूने बहुत वाजिब किया मगर जब मैं अज़ीमां का अहवाल उन्हें सुनाने लगा तो कुछ न बोले आखीर तक सुन गये और तब मुझे उनके चेहरे से फिर कुछ उम्मेद पाई गई। मैं तमाम अहवाल कह कर उनके कदमों पर गिर पड़ा और अर्ज़ करने लगा कि आप बराय मेहरबानी और इनायत मेरी यह अर्ज़ कुबूल कीजिये।

उन्होंने कहा "अमीरअली। तू इस बारे में बहुत ज्यादा ग़र्क़ हो चुका है, अगर तू अपना इक़रार पूरा न करेगा तो अज़ीमां उस ज़हर के प्याले को जो उसने तयार किया है पी जायगी। तू उसकी मौत का सबब होगा और इसका दाग़ हमेशा के लिये तेरे दिल पर रहेगा, इसी ख्याल से मैं अपनी इजाज़त देता हूं। मैं अब ज़ईफ़ हो गया हूं और चन्द बरसों का मेहमान हूं, फ़क़त यही एक ख़्वाहिश बाक़ी है कि तेरी शादी कर तेरी औलाद देख लूं। मैंने हि-

न्दोस्तान में रवाना होने के पेश्तर तेरे शादी करने की कोशिश की थी मगर वह नाकामयाब हुई। यहां कोई मौका ऐसा नहीं है, और चूंकि तू अपनी मर्ज़ी के मुताबिक एक बीबी पसन्द कर चुका है पस बेहतर है कि तेरी शादी उसी के साथ हो, अल्लाह ने खुद तेरे लिये बीबी भेज दी है वह तुझे मुबारक हो, और यह भी तेरी खुशनसीबी है कि वह खूबसूरत है जैसा कि तेरे बयान से मालूम होता है। तुझे फ़कत रुपयों की ज़रूरत पड़ेगी क्योंकि तू उस आया को देने का इकरार कर चुका है, अगर वह बाईमान अपना काम अंजाम दे तो मेरी तरफ़ से ५०) उसे दीजियो—बेहतर होगा कि तू कुछ सोना साथ लेता जा क्योंकि इस में सुभीता होगा"।

मैंने कहा "आप बजा फ़र्माते हैं मैं निहायत खुश हूं। फ़कत आप की बर्कत चाहिये और मैं तमाम बन्दोबस्त कर लूंगा आज शाम को आप से पट्टनचेरू में मुलाकात होगी"।

उन्होंने कहा "इनशाअल्लाह! खबरदार और होशियार रहना। गोकि कोई ऐसा खतरा नहीं है मगर बेहतर होगा कि तू अपने चन्द आदमियों को साथ लेता जा"।

"बहुत अच्छा" मैंने कहा और उठ खड़ा हुआ "मैं अपने चन्द मोतबिर साथियों को हमराह लेता जाता हूं"।

मैं फ़ौरन् अपने साथियों को ले घोड़े पर सवार हो रवाना होने को तयार हुआ, मगर अज़ीमा के लिये सवारी दरकार थी इसलिये मैं उसी दम एक पड़ोसी के पास, जिस के यहां किराये की गाड़ी थी जा पहुंचा। मैंने ज़ोहरा के मिलने की उम्मेद से पेश्तर ही बन्दोबस्त कर बीडर तक गाड़ी किराये कर ली थी।

उसके दर्वाज़े पर पहुंच कर मैंने कहा "फाज़िल मैं आगया गाड़ी कहां है"।

उसने कहा "और ज़नानो सवारी कहां है सो तो कहिये?"

मैंने कहा "वह भी तयार है तू जल्दी कर फ़ज़ूल वक़्त क्यों ज़ाया करता है?"

उसने कहा "तो मेरी मां के लिये २०/ दे दीजिये मैं बैल जोत कर गद्दी तकिया लगा देता हूं"।

मैंने कहा "यह ले—तेरे जान की कसम बिरादर, ज़रा जल्दी कर"?

उसने कहा "मैं अभी आता हूं" यह कह कर मकान के अन्दर चला गया और फ़ौरन् गाड़ी के पर्दे और गद्दियां ले कर बाहर निकल बोला—

"यह लीजिये"—बस फ़ौरन् पर्दे वगैरह लगा बैल जोत वहां से उछल करतली * पर जा बैठा और कहने लगा "कहिये कहां चलूं? शहर की तरफ़?"

मैंने कहा "नहीं, हुसैनशाहवली की दर्गाह को चल, मैं रास्ता नहीं जानता तेरे पीछे २ चला आऊंगा"।

उसने कहा "बहुत अच्छा, मैं रास्ता जानता हूं मेरे साथ साथ चले आइये"।

मैंने पूछा "उसका रास्ता बेगमबाज़ार की तरफ़ से है या कारवां से?"

उसने कहा "दोनों तरफ़ से पड़ता है जिधर से कहिये चलूं"।

मैंने पूछा "क्या कोई दूसरा रास्ता नहीं है?"

उसने कहा "है तो मगर उसमें बड़ा चक्कर है। अंगरेज़ी रेसिडण्ट के बंगले के पास से शीशामहल को फिरना होगा, यह सड़क बेगमबाज़ार और कारवां सराय के बहुत पीछे से जाती है"।

मैंने कहा "तो बस उसी सड़क से चलो मैं इन दोनों से नहीं चला चाहता"।

उसने कहा "बहुत अच्छा चलिये" बस फ़ौरन् बैलों की दुम मरोड़ अंगूठे से उन्हें गोद चल पड़ा, पहिले तो बैल आहिस्ते २ चले फिर तेज़ चलने लगे। जब वह कुछ दूर आगे बढ़ गया तो हम लोग भी रवाना हुये।

इक्कीसवां पर्व्व।

चलते २ शहर के बाहर हुये और दर्गाह का रास्ता लिया। मुझे उम्मेद

* करतली = गाड़ीवाले के बैठने की जगह।

थी कि शायद अज़ीमां रास्ते ही में मिल जाय मगर यह न हुआ। सड़क के करीब एक ऊंचे मुकाम पर मैंने गोलकंडा के बादशाहों का कबरिस्तान देखा। मैंने ऐसी चीज़ पेश्तर न देखी थी इसी लिये मुझे ज़्यादा ताअज्जुब होता था। मैं उतने दूर से भी उनका कद और उनकी खूबसूरती देख कर हैरत में आ गया, फिर नज़दीक जाने पर आप क्या पूछते हैं। अभी वक़ बहुत बाकी था इस लिये मैंने अपने दोस्तों से सलाह की कि अगर दर्गाह बहुत दूर न हो तो ज़रा एक मर्तबः इनकी भी सैर करना चाहिये। मैंने फ़ौरन् घोड़े को तेज़ कर गाड़ीवाले के पास पहुंच उससे दर्याफ़ किया कि यहां से दर्गाह कितनी दूर है।

उसने कहा "दर्गाह यहां से दिखलाई तो नहीं पड़ता मगर वह ठीक इस कबरिस्तान के पीछे एक बड़े तालाब के किनारे है। आप उसे फ़ौरन् पहिचान लेंगे क्योंकि उसका सुफ़ेद गुम्ब़ज़ और सोनहला कंगूरा दूर से इमलियों के दरख़ के ऊपर से दिखलाई पड़ता है।

मैंने कहा "बहुत अच्छा, तुम वहां चलो और अगर तुम से कोई पूछे तो कहना कि हम शहर से आते हैं और गाड़ी के मालिक अभी पीछे हैं। तब तक हम इन कब्रों की सैर कर तुम से फ़ौरन् आ मिलते हैं।

गाड़ीवाला तो सीधी सड़क से चला गया और हम लोग रास्ता छोड़ बादशाहों की कब्र की तरफ़ रवाना हुये। नज़दीक पहुंचने पर उनकी बुलन्दी और खूबसूरती, कारीगरी और दस्तकारी देख कर मुझे निहायत हैरत और ताअज्जुब हुआ, कहीं २ उनकी टूटी फूटी हालत और बरबादी देख कर दिल पर एक संजीदा असर पैदा होता था।

पीरखां जो मेरे साथ गया था कहने लगा—"अफ़सोस की बात है कि इस शहर के रहनेवाले इन इमारतों के आस पास बाग नहीं लगाते। मैं देखता हूं कि इस मुकाम को लोग बतौर कबरिस्तान के भी भूल गये हैं"।

मैंने कहा "ये जैसे हैं बेहतर हैं, इस ज़माने के कम्बख़ों की मिट्टी इन अमीरों के साथ न मिलनाही वाजिब है"—इतने में हम लोग एक कब्र की इमारत के पास पहुंचे—मैंने कहा "देखो ये जो यहां दफ़्न हैं किसी वक़ में बादशाह और शहज़ादे थे—ये वे लोग हैं जिन्हों ने तलवार की नोक से मुल्क

फतह किया और अपनी कब्ज़े में रक्खा—और अब के ज़माने के लोग कैसे हेच और कमकद्र हो गये हैं कि फिरंगीयों की दी हुई रोटी पर ज़िन्दगी बसर करते हैं।

हम लोग एक तंग सिढ़ी से मकबरे के ऊपर पहुचे, वहां से चबूतरे पर निकल बड़े गुम्मज़ के पास खड़े होकर देखा तो शहर की बस्ती नीचे गांव सी मालूम पड़ती थी, मगर यह आबादी उस के मुकाबिल कुछ भी न थी, जिसका बयान मैं आपसे पेश्तर कर चुका हूं क्योंकि यहां उन सुफ़ेद इमारतों में से एक भी न दिखलाई पड़ता था, फकत दरख़्तों की चोटियों के ऊपर से मक्काममस्ज़िद और चारमीनार पहिचाने जाते थे। चबूतरे के दूसरे तरफ़ से तमाम कबरिस्तान एक निगाह से दिखलाई पड़ता था—हर एक बड़ी कबर के पास कई एक छोटी २ कबरें निहायत खूबसुरत नज़र आती थीं। इनसान का नामोनिशान न था, किले की ऊँची भूरी दीवार पर बेल चढ़ गई थी और तमाम सूनसान मालूम पड़ता था।

इस खामोशी और बर्बादी से एक अजीब असर दिलपर पैदा होता था—हम सब लोग इधर से उधर कबरों को देखते फिरते मगर ज़बान से एक लफ़्ज़ भी न बोलते थे। बाज़े २ गुम्मज़ों में ज्यादा अँधेरा पाया जाता और उनके छत्त में जगली कबूतर और चमगीदड़ों का गरोह नजर आता था जिनके चीखने और गुटकने की आवाज़ ऊचे गुम्मज़ में गूंजती थी, मगर कितने ही गुम्मज़ बसबब रोशनी के साफ़ और खुशनुमा नज़र आते थे!

बाद देखने कई एक बड़े २ मक़बरों के मैने कहा "बस काफी है, हम लोग यहां फ़ज़ूल वक़्त खराब कर रहे हैं और वहां हमारी इन्तिज़ारी खींची जाती होगी। देखिये वह साम्हनेही दर्गाह है बेहतर है कि वहां चल कर तयार रहें, अब वह आ गई होगी"।

हम लोग वहां से रवाना हुये और दर्गाह के पास पहुंच कर देखा कि हमारी गाड़ी लगी है मगर और कोई नहीं है, मुझे गुमान हुआ कि शायद अज़ीमां अपने इकरार को पूरा न कर सकी, फिर मैने ख्याल किया कि अगर वह दो पहर तक न आई तो मैं शहर में जाकर उसे तलाश करूंगा क्योंकि

अब में उसे अपनी बीबी समझता था। फिर में ऐसी खूबसूरत परीज़ाद को उस ज़ालिम शौहर के हाथ में क्योंकर छोड़ सकता था जो हर्गिज़ ऐसे बेशकीमत जवाहिर के काबिल न था पर ताहम् अभी सबेरा था, और चूंकि दर्गाह का फ़ासला शहर से मेरे ख्याल करने की बनिस्बत ज्यादा दूर था उसके आने में कई घंटे की देर थी।

मैं दर्गाह के अन्दर वारिद हुआ और बादर्जा गुज़ारने नज़र वगैर ह के मैने दिलोजान से यह दुआ मांगी कि या वली साहब मेरे आने को मुराद बर आवे। यह तमाम काम खतम करने बाद मैं दरख़्तों के साये तले बैठ दर्गाह के मुल्लाओं में से एक शख्स से बातें करने लगा। ये मुल्ला लोग हमेश: वली साहब की दर्गाह में कुरान पढ़ा करते हैं। उसने मुझ से पूछा कि आप कौन हैं—मैने जवाब दिया कि मैं शहर का रहनेवाला हूं और अपनी बीबी की सख़ बीमारी के रफ़ा होने पर उसे लेकर दर्गाह की ज्यारत के लिये आया हूं और चूंकि मैं अपने साथियों के हमराह आगे निकल आया उसकी गाड़ी पीछे आ रही है।

कई घंटे गुज़र गये मगर अज़ीमां न आई। साहब, मैं निहायत फ़िक्र और पशोपेश में पड़ा। क्या उस पर कोई आफ़त आई? क्या उसका शौहर एकबयक वापस आ गया? क्या उसने मुझसे झूठा वादा किया? नहीं नहीं उसकी तकलीफ़ या उसके रंज में कोई बहानेसाज़ी न थी, मुझे धोखा देने से उसे क्या फ़ायदा था? दो पहर हो गई और नौबत बजने लगी अब तक अज़ीमां का कुछ निशान न दिखलाई दिया। सब्र मेरे हाथ से जाता रहा यहां तक कि मैं अपने घोड़े के पास जा उस पर सवार हो अपने साथियों को वहीं ठहरा अज़ीमां की तलाश में शहर की तरफ़ रवाना हुआ। अभी दर्गाह के गांव से बाहर न हुआ था कि मैंने तीन पर्देदार गाड़ियां आते देखीं। मेरा कलेजा उछलने लगा और मैंने लौटने का इरादा किया; मुझे ख्याल हुआ कि इन तीनों में से एक गाड़ी ज़रूर उसकी होगी पस मैं भी दर्गाह में चलकर उसकी इन्तज़ार में ठहरूं।

मुझे जल्द लौटा देख पीर खां ने इसका सबब बड़े इश्तियाक से पूछा।

मैंने कहा "वह आ रही है फ़ाज़िल से कहो कि फ़ौरन् गाड़ी तयार करके पहनवेश के फाटक की तरफ़ ले चले"।

इतने में मैं घोड़े से उतर फाटक पर जा खड़ा हुआ।

पहिली गाड़ी आई, इसमें बहुतेरी कस्बियां भरी थीं जो दर्गाह में गाने की मन्नत से आई थीं, सबब यह था कि चंद रोज़ पेश्तर इनमें से एक की आवाज़ बिलकुल जाती रही थी मगर वली साहब की मन्नत मानने से फिर गला दुरुस्त होगया था। वह गाड़ी मेरे पास से होकर निकल गई और वहीं से उनके दर्गाह में गाने की आवाज़ मेरे कान में आती थी।

दूसरी गाड़ी भी पहुंची, इसमें से तीन बुढ्ढी औरतें मिठाई की किश्तियां लिये हुई निकलीं। यह मिठाई किसी अमीर के घर से मुल्लाओं के वास्ते इस लिये आई थी कि वे लोग उस घर की मलिका के आराम होने के लिये जो सख़्त बीमार थी वली साहब से दुआ मांगे।

मैंने फ़ौरन् आगे बढ़कर उनमें से एक से पूछा "अम्मा आपने किसी गाड़ी में मेरे ज़नाने की तीन औरतों को शहर से इधर आते देखा है"?

उसने कहा "हां वे लोग हमारे पीछे ही आ रही हैं, उनकी गाड़ी उसी नाले में जो रास्ते में पड़ता है टूट गई थी और आहिस्ते २ आ रही है थोड़ी देर में पहुंच जाती है। औरतें हिफ़ाज़त से हैं, क्योंकि मैंने उनसे कहा था कि आप लोग हमारी ही गाड़ी में आ जावें पर उन्होंने कहा नहीं हमारी गाड़ी बन गई है हम लोग इसी में आवेंगी"।

मैंने कहा "अलहम्दुलिल्लाह! भला वे हिफ़ाज़त से तो हैं मैं सुबह से उनके इन्तिज़ार बैठा हूं और निहायत फ़िक्र में था"।

उस बुढ्ढी ने कहा "यह कोई ताअज्जुब की बात नहीं है, क्योंकि ख़ानम् निहायत पीली और कमज़ोर दिखलाई पड़ती थी, लेकिन माशाअल्ला! वह निहायत ख़ूबसूरत और हर तरह से हुज़ूर के लायक बीबी है"।

मैंने लापर्वाही से जवाब दिया "वह बहुत बीमार थी और अब अपनी मन्नत अदा करने के लिये आती है"।

उसने कहा "अल्लाह उसे बीबी फ़ातिमा की उम्र बख़्शे और लड़के बालों

से भरा पूरा रक्खे, मुझे ऐसे जोड़े को देख कर दिल से निहायत खुशी होती है जिन्हें अल्लाह ने एक दूसरे के लायक देख कर मिला दिया है, मगर साहब अब मैं जाती हूं मेरी साथवाली मेरी इन्तज़ारी देखती होंगी"।

वह भी चली गई और थोड़ी ही देर बाद वह गाड़ी जिसके लिये मैं इस कदर मुश्ताक था कोने पर चन्द मकानों के पास घूमती और आती हुई दिखलाई दी और आहिस्ते २ फाटक के पास पहुंची। साहब, क्योंकर मेरा दिल उछलने लगा। मैंने ख्याल किया कि क्या यह वही मेरी जान, मेरी प्यारी है या तीसरी मर्तबः मुझे नाउम्मेदी होगी?

गाड़ी खड़ी हुई और वह बुड्ढी दाया आहिस्ते से पर्दे के बाहर हुई, मैं उसी वक़्त उसके कदमों पर गिर पड़ा होता मगर मैंने ख्याल किया कि यह वाजिब न होगा पस मैं फ़ौरन् उसके पास पहुंचा मगर गाड़ीवाला मुझे रोक कर और कहने लगा—

"जनाब, यह ज़नानी सवारी है, और यह इखलाक़ की बात है कि आप हट जावें ताकि सवारी के उतरने में पर्दा रहे"।

मैंने कहा "चुप रह बेवकूफ़, यह औरतें मेरीही हैं"।

उसने कहा "तब तो यह बातही दूसरी है—उम्मेद है कि हुज़ूर की नाराज़ी इस गुलाम पर देर होने के लिये न होगी—गाड़ी का धुरा नाले में टूट गया, इसी लाचारी थी; इसके टूटने का कोई ख़तरा न था क्योंकि अभी हालही मुहर्रम में मैंने नया धुरा लगाया था"।

मैंने कहा "खैर कुछ पर्वाह नहीं, अब तू जा हम लौट कर आवेंगे तो तुझे किराया चुका देंगे, साम्हने एक खाली गाड़ी खड़ी है लौटते वक़्त हम उसे किराया कर लेंगे"।

वह कुछ दूर उतरकर चला गया और ज्योंही मैंने पर्दा उठा कर अपनी माशूका को बैठे देखा मेरा कलेजा मारे खुशी और जोश के उछलने लगा, और उसका भी चेहरा इस कामयाबी पर खुशी से चमक उठा।

मुझे देखते ही उसने कहा "शुक्र खुदा का जो आप ने अपने वादे पर

इस लौंडी के लिये इस कदर तकलीफ़ उठाई। मैंने उसे सीने से लगा लिया और बेशुमार बोसे लबों पर लिये।

उस बुड्ढी ने कहा "तोबा, तोबा! क्या आप दम भर भी सब्र नहीं कर सकते पहिले उसे उतारिये, हम लोग दर्गाह में हो आवें"।

मैंने उसे हाथ धर के गाड़ी से उतारा और वह बुर्के से चेहरा छिपा उस बुड्ढी और नार्गिस के हाथ पर लटक मेरे पीछे २ दर्गाह में पहुंची।

सब से अौव्वल हमने कुछ रुपये और थोड़ी मिठाई जो अजीमां अपने साथ लाई थी उस मुल्ला के हाथ में जिस्से मैंने गुफ़्गू की थी दिये और उसने वली साहब के कब्र के आगे नज़र गुज़ारानी और कहा—

"क़बूल हुआ—अब जो दुआ आप चाहें मांगें, हमारे वली साहब की इनायत से रसूलल्लाह क़बूल फ़र्मावेंगे"।

मैंने कहा "मुल्ला साहब, शुक्र खुदा का है मैं फ़क़त इतना ही चाहता हूं कि यह मेरे आंखों की मोती तन्दुरुस्त रहे और खुदा इस्की ज़िन्दगी बख्शे। दरहक़ीक़त इतने दिनों तक मेरी जान गोया सूली पर चढ़ी थी मगर अब फ़ज़्ल-अल्लाह से यह कुछ आराम हुई है और अब यही दुआ है कि यह तन्दुरुस्त रहे"।

उसने कहा "अलहम्दुलिल्लाह! आमीन, हमारे वली साहब की बर्कत कभी खाली नहीं जाती, मैं हुजूर से बहुतेरे मुआजिज़े जो यहां देखने में आये हैं बयान कर सकता हूं"।

मैंने कहा "इसमें कुछ शक नहीं कि हुसैनशाहवली का नाम दूर-दराज़ तक मशहूर है और हम शहर के लोग इस बात के निहायत ममनून और मशकूर हैं कि ऐसे ऐसे पाक वली लोगों की दर्गाह पुराने ज़माने में इस्के आस पास क़ायम हुई है, क्योंकि आज कल का ज़माना इस क़दर ज़लील हो गया है कि बगैर इन लोगों की रहमत के अल्लाताला की सख़्त खफ़गी और नाराज़ी हम पर नाज़िर होती"।

मुल्ला ने कहा "बजा है, हुजूर की गुफ़्गू में मज़हबी लज्जत है जिस्से ज़ाहिर होता है कि गोकि आप का बाना सिपाहियाना है मगर आप का दिल

मज़हबाना है, और आफ़रीं है उसे जिसमें ये दोनों बातें पाई जाती हैं। अगर हुजूर को फ़ुर्सत हो तो मैं वली साहब के बहुतेरे मुआजिज़े सुना सकता हूं और चूंकि मुझे तीसरे पहर तक फ़ुरसत है चलिये दरख़्तों के तले बैठ कर मैं आप से तमाम बयान करूं"।

मैंने कहा "मुल्ला साहब, माफ़ कीजिये, मुझे फ़ुर्सत निहायत कम है, और चूंकि मैंने सेयदानी की वालिदा से यह इक़रार किया है कि मैं शाम होने और सर्दी पड़ने के पेश्तर वापस आ जाऊंगा इसलिये मुझे निहायत उजलत है क्योंकि सिपहर ढल गया है"।

उसने कहा 'जैसी हुजूर की मर्ज़ी—ताहम् ये चन्द वर्क़ जो मैंने फ़ुर्सत पाकर लिखें हैं आप के पास रहने से हुजूर के दिलबहलाव के सिवाय तालीमदेह भी होंगी—हुजूर फ़ारसी तो बेशक पढ़ सकते होंगे?"

मैंने कहा "हां क़द्रेक़लील—हम सिपाह लोग अक्सर कम तालीमयाफ़्ः होते हैं ताहम् मैं इस किताब को रख लेता हूं और यह तुम्हारे पान पत्ते के लिये तुम्हारी नज़र है"—यह कह कर मैंने एक अशर्फ़ी उसके हाथ में दे दी।

उसके देखते ही बुड्ढे की आंखें खुल गईं और बादआं करने तस्लीमात के वह रवाना हुआ।

उस बुड्ढी ने कहा "अब वक़्त ख़राब करने का मौक़ा नहीं है आज निहायत तेज़ सफ़र करना चाहिये। आप कोई गाड़ी साथ लाये हैं न?"

मैंने कहा "हां तयार है, अगर कोई चीज़ तुमारी गाड़ी में हो तो मैं उसे इस गाड़ी में रख दूं"।

उसने कहा 'तो दो एक शख़्स मेरे साथ कर दीजिये, मैं और नर्गिस दोनों मिल कर नई गाड़ी को दुरुस्त कर फ़ौरन् वापस आती हूं"।

वे दोनों भी चली गईं, फ़क़त मैं और अज़ीमां दोनों अकेले रह गये। उस वसीय अहाते में अब कोई न शख़्स न था औरतें सब मक़बरे के अन्दर गा रहीं थीं और तमाम मुल्ला उनके इर्द गिर्द बैठे गाना सुन रहे थे।

मैंने कहा "अज़ीमां क्या तुम ज़्यादा सफ़र की तकलीफ़ बर्दाश्त कर सकोगी?"।

उसने कहा "चूंकि मैं आप के और आप मेरे साथ हैं मैं सब बर्दाश्त कर सकती हूं, प्यारे अब मैं महफ़ूज़ हूं, मगर जब से मैंने आख़िरी मर्तब: आप को देखा तबसे लेकर जब तक मैं इस कम्बख़ शहर से बाहर न हुई मेरा जी कैसे आगे पीछे में पड़ा था"।

मैंने पूछा "कहो तो तुमने क्योंकर बग़ैर झगड़े के वहां से निकलने का सामान किया ?"

अज़ीमां ने कहा "जब आप चले आये मैंने समझा कि मेरी खुशी और राहत हमेशा के लिये जाती रही। मेरा दिल हुआ कि मैं उसी वक़ आप को बुलवा कर आप के साथ चली चलूं। मैं आप की खूबसूरती और मुहब्बत देख चुकी थी, मैंने ख्याल किया कि अल्लाह ने मेरे दिल के म्वाफ़िक जोड़ा मुझे भेज दिया। मैं हर रोज़ अपने खाविन्द की मार और घुड़कियां सहती और हज़ारों तरह के सदमें उठाती थी। आपके चले आने पर मुझे यह ख्याल हुआ कि मेरे हाथ से वह शख्स जाता रहा जिससे मैंने चन्द लहमों तक वह आसूदगी पाई जो मैं ख्वाब में ख्याल किया करती और जागने पर फिर मायूस हो जाती थी। मुझे उस वक़ किसी तरह सब्र न आता था मगर मेरी दाया और नर्गिस मुझे दिलासा देती थीं। वे कहती थीं कि हम तेरे लिये अपनी जान भी देने को तयार हैं मगर तेरा काम ज़रूर करेंगी, सो मुझे भी हिम्मत हुई और कुल्लू भाग चलने की तमाम तयारी करने लगी। हम लोगों ने अपने चन्द कपड़े और ज़ेवर बांध लिये और रुपया जो करीब कई सौ के बचा था साथ रख लिया। सुबह होने के कुछ पेश्तर हम ज़रा सो रहे। दिन चढ़े कुल्लू ने लौंडी और दो बुड्ढे गुलामों से कहा कि हम लोग दर्गाह को जांयगी कोई गाड़ी ले आओ। आफ़ताब निकलने तक गाड़ी आ पहुंची और हम लोगों ने अपना असबाब दो गठड़ियों में दरी और फ़र्श के बहाने से गाड़ी में रख सवार हो फ़ौरन् इधर का रास्ता लिया।

ज्योंही अज़ीमां अपना अहवाल कह कर चुप हुई कि कुल्लू आकर कहने लगी—

"चलिये सब सामान दुरुस्त हो गया मैंने अपनी गाड़ी रवाना कर दी और आपवाली गाड़ी तयार है पस अब देर करना न चाहिये"।

उसके जल्दी करने की कोई ज़रूरत न थी क्योंकि हम लोग खुद उजलत में थे, पस फ़ौरन् उठ खड़े हुये और उसके साथ चल पड़े"।

गाड़ी तयार थी—मेरे लोग हमराह थे—और नर्गिस सवार हो चुकी थी। अज़ीमा और कुल्लू दोनों आते ही सवार हो गईं"।

मैंने कहा "क्या तुम भी चलोगी"?।

उसने कहा "हां मीरसाहब, मेरा मकान बीडर में है वहां तक मैं आप के हमराह चलूंगी क्योंकि अब इस शहर में मेरा रहना गोया जान से हाथ धोना है अगर मैं शहर में वापस जाऊँगी तो बेशक उस शैतानों के बादशाह नुसरतअली खां के हाथ पड़ूंगी जिसका घर हम लोगों ने तबाह कर उसकी दाढ़ी पर थूक दिया है"।

मैंने फ़ाज़िल से कहा 'हांको गाड़ी, और तेज़ चलो—अब के पेश्तर पट्टन-चेरू पहुंच जाना चाहिये"

दर्गाह से आगे का रास्ता, तलाव गुज़रने के बाद निहायत तंग और उजाड़ पड़ता था। दोनों तरफ़ ऊंची २ पहाड़ियां थीं और कहीं २ रास्ता इस क़दर तंग था कि गाड़ी बमुश्किल गुज़र सकती थी।

चलते २ रास्ते में एक नीची दीवार जिसमें गोलियों के निशानात लगे थे नज़र पड़ी। मैंने पीरखां से कहा यह मुकाम तो निहायत उम्दे मौके का है, मैं कह सकता हूं कि यहां सैकड़ों वारदात ज़माने गुज़श्ते में हुई होंगी"।

उसने कहा "लोग इस मुक़ाम के बारे अजीब २ क़िस्से बयान करते हैं हालमें खुद हम्हीं लोगों ने कई वारदात इसी मौके पर की है, जिन सात बनियों का हाल मैंने आप को सुनाया था वे उस मुकाम पर गड़े हैं" इतना कह कर उसने उँगली से एक ऊँचे मुकाम की तरफ़ इशारा किया जो सड़क से कुछ फ़ासले पर था। फिर पीरखां ने कहा कि "यहां क़ब्र का बनाना निहायत मुश्किल काम था, नीचे तमाम पत्थरही पत्थर है और लाशों को हम लोग बमुश्किल ढकने भी न पाये मगर इस मुल्क में उन्हें कौन पूछता है? जब हम लोग उन मुसाफ़िरों के साथ चले जाते थे हमने देखा कि इसी घाटी में दो शख़सों की लाश, टुकड़े २ की हुई, पड़ी है और कोई पूछनेवाला नहीं।

मैंने कहा "जो ही हम लोग अपनी निशानात पीछे छोड़ चले हैं और जो सच पूछिये तो हम लोग दरहकीकत किस्मतवर हैं। अगर हिन्दोस्तान के रास्ते में कोई भी बनिज हम लोगों को दस्तयाब न हो तौभी कुछ मुज़ायका नहीं।

उसने कहा "हम लोगों को कई बरस तक ब-आराम औक़ात बसर करने के लिये माल हाथ लग चुका है, ताहम् बगैर बनिज के हाथ झूठा पड़ जाता है और आप का अभी नया सिलसिला है, जितने ही ज्यादा बनिज आप के हाथ लगेंगें रबत बढ़ता जायगा"।

योंही बातें करते २ चिराग़ लगने के बहुत देर बाद हम लोग पट्टनचेरु पहुंचे और मुझे अपने वालिद और तमाम गरोह को सही सलामत पहुंचा देख निहायत खुशी हासिल हुई, उन लोगों ने अपना ख़ेमा एक आलीशान बर्गद के दरख़ तले एक फ़कीर के तकिये के पास खड़ा किया था। एक छोटा सा ख़ेमा अज़ीमां के वास्ते लगा था, जिसमें शब को बआराम रहने का सामान मुहैय्या करने के बाद मैं ने जाकर वालिद से मुलाक़ात की और उन्हें तमाम अहवाल सुनाया।

वे बोले "तू निहायत किस्मतवर है—मैं तेरे लिये अज़हद मुतफ़िक्रि था ख़ासकर जब तू शाम होने पर भी न आया, मगर अब कुछ भी ख़तरा नहीं है। लेकिन यह तो बतला कि तेरी नई बीबी कैसी है? क्या यह भी ज़ोहरा के मानिन्द खूबसूरत है?

मैंने कहा "जी हां ठीक उसी के मुआफ़िक़—चांद भी ऐसा क्या खूबसूरत होगा, वह मिज़ाज की निहायत नेक और मुहब्बत की सादिक है; आप उसे कल सुबह को देखियेगा इस वक़ सफ़र की हरारत से निहायत थकी है"।

उन्होंने कहा "और तू भी इस वक़ थका और भूखा होगा मेरे पास तेरे लिये थोड़ा सा, निहायत उमदा पुलाव तयार है"।

पुलाव मँगाया गया, और मैंने उसमें से थोड़ा सा अज़ीमां के लिये भेज कर खाना शुरू किया, वह मुझे निहायत लज़ीज़ मालूम पड़ा क्योंकि मैंने तमाम दिन सिवाय उस थोड़ी सी मिठाई के जो अज़ीमां अपने साथ लाई थी कुछ भी न खाया था।

बाईसवां पर्व्व।

चौथे रोज़ सुबह को हम लोग बीडर पहुंचे। गोकि यह शहर हैदराबाद की मुआफ़िक़ बाहर से वैसा खुशनुमा नहीं मालूम पड़ता ताहम् यह निहायत आबाद और दिलचस्प है। शहर के पासही हम लोगों को एक ऊंची सी पहाड़ी मिली जो एक तरफ़ को ढालुआं होते २ ज़मीन के बराबर आ गई थी इसके हटतेही शहर एकबयक निगाह के रूबरू आ गया। शहर की चहार दीवारी ऊंचे पहाड़ी पर बनी थी जिसके ऊपर से एक ऊंचा अधूरा सा मीनार निहायत बुलन्दी पर नज़र आता था। दाहिनी तरफ़ चन्द मकबरों के सुफ़ेद गुम्मज़, अमराइयों में जिन से पहाड़ अज सरोपा घिरा था दिखलाई पड़ते थे। शहर के नज़दीक पहुंचने पर जो किसी वक़्त में बहमनी बादशाहों के रहने का दक्खिन में खास दारुस्सलतनत था निहायत संजीदगी का असर पैदा होता था खासकर जब इस की बर्दादी उस गुलज़ार शहर से मुकाबिल ख्याल की जाती थी जिसे हम लोग चंद्रोज पेश्तर पीछे छोड़ आये थे। हमारे उन शख्सों ने जो पेश्तर से शहर में वारिद हुये थे उस मुकाम पर खेमा खड़ा किया था कि जिस फाटक से हम लोग दूसरे दिन सुबह को रवाना होनेवाले थे। मैं अपनी गरोह से इलाहिदा होकर बीच शहर से चला जो गोकि बमुकाबले हैदराबाद के निहायत अबतर था ताहम् मेरे ख्याल के बनिश्बत ज्यादातर रौनक और गुलज़ार पाया गया।

शहर से दूसरी तरफ़ बाहर निकल कर मैं अपने खेमे में पहुंचा। देखता क्या हूं कि मेरे चन्द साथी नहा रहे हैं, चंद कूंये के किनारे बैठे रोटियां पकाने की तयारी कर रहे हैं और सब के सब उस खुशी व खुर्रमी के साथ आपस में गुफ़्गू कर रहे थे कि जिस्से उनके दिल की आज़ादी और आसूदगी साफ़ ज़ाहिर होती थी—हर एक शख्स उम्मेद से पेश्तर मकान लौटने और गहिरा माल हाथ लगने से निहायत खुश था।

मैंने वालिद से मुलाकात होते ही कहा "बाबाजान यह शहर निहायत मज़हबी देख पड़ता है मुल्ला तो यहां बहुतेरे होंगे, मैं अर्ज़ करता हूं कि अगर आप किसी को बुलवा भेजते तो निकाह पढ़ा लिया जाता ताकि मैं अज़ीमां को बतौर अपनी बीबी के क़ुबूल करता।

उन्होंने कहा "मेरे फर्ज़न्द मैं तो इसके बखिलाफ़ नहीं हूं मगर वह जईफ़ मुल्ला जिसे मैं बुलाऊंगा चाहे कोई भी हो, यह देख कर हैरत में आ जायगा"।

मैंने कहा "कुछ पर्वाह नहीं उसे हैरत में आने दीजिये, मगर अब मैं उस के बग़ैर नहीं रह सकता, इसलिये इसे मुकद्दम समझ कर बराह इनायत उसे जल्द बुलवा भेजिये।

वालिद ने पीरखां को किसी मुल्ला की तलाश में भेजा जो फ़ौरन् एक शख्स को तलाश कर ले आया। वालिद ने उसे निहायत इखलाक से बैठाया और अपने बुलाने की गर्ज़ बयान की। यह सुन कर उसे निहायत ताअज्जुब हुआ और कहने लगा "जनाब ऐसी बात तो मैंने आज तक कभी भी न सुनी थी कि सफ़र में शादी की जावे यह कार्रवाई हरसूरत से ग़ैरवाजिब और खिलाफ़-कायदा है।

जब वह अपनी तमामराय हमारे खिलाफ़ देचुका मेरे वालिद ने जवाब दिया कि "जनाब मुल्ला साहब, आप देखते हैं कि मुझ से बढ़ कर मज़हब का पाबन्द या उसके दस्तूर और रसूमों पर लिहाज़ रखने वाला दूसरा शख्स शायद न पावेंगे। मैं हिन्दोस्तान का सैय्यद हूं और दिन में हमशा पांच मर्तब: निमाज़ पढ़ता हूं, रमज़ान में रोज़ा रखता और शरह के तमाम हुक्मों को मानता हूं। गोकि मैं खुद हर्गिज़ कोई कार्रवाई ऐसी नहीं किया चाहता जो हमारे मज़हब से बईद हो पर कई सबब ऐसे हैं जिन्हें मैं बयान नहीं कर सकता जिनके बाइस इस अम्र का अंजाम देना निहायत ज़रूरी है और अगर आप इन्कार करें तो मैं लाचार हूं फ़कत इतनाही कह सकता हूं कि बीडर जैसे शहर में कुछ मुल्लाओं की कमी नहीं है पस अगर आप इसे नहीं करते यह कह तो कोई दूसरा शख्स बेशक कर देगा और आप का यह इनाम उसे मिलेगा" कर मेरे वालिद ने दो अशर्फ़ियां उसके आगे रख दीं।

मुल्ला ने दोनों अशर्फ़ियां उठा कर जेब में रखलीं और कहने लगा "बेशक, तब तो यह बातही दूसरी है चूंकि इस अम्र का होना निहायत ज़रूरी है तो अल्लाह के नाम पर आइये आग़ाज़ कीजिये, मैं ख्याल करता हूं कि इसमें ऐसा ही होना था, पस आप तमाम बीडर में मेरे सिवाय निकाह पढ़ानेवाला दूसरा

रज़ामन्द शख़्स न पाइयेगा। हुजूर हुक्म दें तो मैं अपनी किताब लेकर फ़ौरन् वापस आता हूं"।

वालिद ने कहा "हां आप बेशक तशरीफ़ ले जाइये"। यह सुन वह मुल्ला शरह की किताब लाने के लिये रवाना हुआ।

उसके जाने पर वालिद ने कहा "देखा, मैं पेश्तरही जानता था कि ऐसा होगा। किस बशर की ताकत है कि सोने की आंच बर्दाश्त कर सके। शाही तख़्त के बादशाहों से लेकर गदा तक इस्का असर एकसां है, इस्की ताकत सब पर ग़ालिब होतीहै, इसीके ज़ोर से इन्सान दूसरे की अक्ल मार बैठता है, हमसाये की जोरू और लड़की की इज्ज़त खरीद सकता है, इसी के ज़ोर से निहायत सादिक़ काज़ियों के काज़ी को भी घूस दी जाती है कि चाहे सैकड़ों खून, हज़ारों जाल, लाखों चोरी या दुनियां में सब से नाकारा क़ुसूर करके भी चाहे जिस शहर में अपने तईं इन्सान बेकुसूर ठहरा लेता है। इसी से भला आदमी नेकतर होसकता है—मगर यह बात शाज़ोनादिर देखने में आती है, अक़सर बद शख़्स इस्से ज्यादातर फ़ायदा उठाते हैं। इसके लिये चाहे जिससे दग़ा, फ़रेब और खून करा लो, चाहे जिसे इन्सान से हैवान बना लो। इसी के लिये नौजवान बीबियां अपने शौहर की इज्ज़त खाक़ में मिलातीं और बुढ़ियां उनकी मदद पहुंचातीं हैं। जो मालामाल है वह चाहे तमाम दुनियां की बदज़ाती करे मगर तौभी खुश रहता है जिस के पास ज़र नहीं है वह भूखा और प्यासा मरता और कभी आराम नहीं पाता। अगर किसी बच्चे को खेलने के लिये रुपया दे दीजिये तो न जाने क्यों वह भी उसे सीने से लगा लेता है और अगर फिर उससे लेलिया जावे तो ज़ार ज़ार रोने लगता है। मुद्दा यह कि इस्की आंच कोई भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। ज़ईफ़ नौजवान, गरीब या अमीर सभी इस के गुलाम हैं। इसके मुक़ाबिल इन्सान की अक़्लमन्दी कोई चीज़ नहीं; शीरीं ज़ुबानी कोई शै नहीं, चालचलन खाक भी नहीं, और इज्ज़त हुर्मत कौड़ी के भी बराबर नहीं है—फ़क़त यह नाचीज़ धातु का टुकड़ा जिसको ज़ुबान नहीं, अक़्ल नहीं, ताकत नहीं, हुर्मत नहीं—इस जहान में वह ताकत और हुकूमत रखता है जो अल्लाताला को आसमान पर हासिल है।